तृतीय अध्याय

नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में मिथक – एक अवलोकन

मिथकीय के एवं पौराणिक उपन्यास सदैव नरेंद्र कोहली के लिए लेखक के रूप में प्रसिद्धि का कारण बना। नरेंद्र कोहली को आधुनिक रामकथा के सर्वश्रेष्ठ उन्नायक कहा जाता है । "डॉ. नरेंद्र कोहली हिंदी में अपने ढंग से अलग तरह साहित्यकार हैं । मिथकीय धरातल पर उन्होंने रचना की नई दिशा की खोज करने के साथ ही उसकी सार्थकता को साबित किया।"[1] सांस्कृतिक राष्ट्रवाद साहित्यकार डॉ नरेंद्र कोहली एक ऐसे लेखक है, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय जीवन शैली एवं दर्शन का समुचित परिचय दिया है । हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में रामायण को लेकर किसी ने भी संपूर्ण एवं कुशलता के साथ इतनी प्रचुर मात्रा में नहीं किया है ।

पौराणिक विषयों का सहारा लेकर लिखा गया उपन्यास समकालीन यथार्थ से खुद को पृथक करने के लिए नहीं है । उन्होंने अपने सृजन कार्य में मिथक को इसलिए जोड़ा है ताकि वह अपनी जीवन, समय, परंपरा एवं संस्कृति को बेहतर ढंग से समझ सके। इन कथाओं में व्यक्त शाश्वत मूल्यों के माध्यम से वह आज की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं । आधुनिक पीढ़ी जो अपनी जड़, अपने अतीत एवं परंपरा से अंजान रहते हैं उन्हें अपनी संस्कृति से जुड़ कर ऐसे आलौकिक कहानियों से ज्ञान प्राप्त कराने के लक्ष्य को ध्यान में रखकर ही कोहली जी ने ऐसे विषय–वस्तु को अपने उपन्यासों का आधार बनाया। अपने मिथकीय रचनाओं के ज़रिए उत्कृष्ट मूल्यों को प्रस्तुत करना चाहते हैं जिससे वह समाज को सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा एवं संकल्प प्रदान कर सकते हैं । पौराणिक कथाएँ हमें पूर्वजों से मिली अमूल्य विरासत है । इसे काल्पनिक एवं झूठ मानने वाले आज के युग को अपने इस विरासत के संबंध में जागरूक करना चाहते हैं जिससे उनमें नैतिकता, उदारता एवं मानवीय मूल्यों का अंतर्निविष्ट कराना चाहते हैं । पौराणिक कथाओं को व्यर्थ कह कर उन्हें खारिज करने की बजाय उनकी पुनः मूल्यांकन करके उनमें निहित प्रगतिशील पक्षों को ठूँठके उनकी भूमिका एवं संवेदनाओं पर विचार करना ही उनका लक्ष्य है ।

---

[1] आधुनिक रामकथा के सर्वश्रेष्ठ उन्नायक हैं नरेंद्र कोहली- https://yourstory.com/hindi/7ff9dea0b3-narendra-kohli-is-the

भारतीय मिथक के प्रसिद्ध पौराणिक कथाओं को अपनी शैली में एकदम मौलिक रूप में कोहली जी ने लिखा है। "'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर' और 'युद्ध' नामक रामकथा श्रृंखला की कृतियों में कथाकार द्वारा सहस्राब्दियों की परंपरा से जनमानस में जमे ईश्वरावतार भाव और भक्तिभाव की जमीन को, उससे जुड़ी धर्म और ईश्वरवाची सांस्कृतिक जमीन को तोड़ा गया। रामकथा की नई जमीन को नए मानवीय, विश्वसनीय, भौतिक, सामाजिक, राजनीतिक और आधुनिक रूप में प्रस्तुत किया है।"[2] मिथक एवं समसमायिक यथार्थ का समन्वयन कोहली जी के मिथकीय उपन्यासों की एक खास विशेषता है। इन उपन्यासों में समकालीन समाज के अनेक समस्याओं, संदर्भों एवं घटनाओं को हम देख सकते हैं। मिथक एवं वर्तमान के इस संयुक्त रूप कहीं लुप्त नहीं होता और न ही वह कथा के बहाव में कोई बाधा डालता है।

3.1 नरेंद्र कोहली के राम कथा श्रंखला के उपन्यासों की कथावस्तु

नरेंद्र कोहली ने राम कथा पर आधारित चार उपन्यास लिखे हैं - 'दीक्षा' 'अवसर', 'संघर्ष एक ओर', 'युद्ध' (भाग1 और 2)। यह उपन्यास अभ्युदय-1 (दीक्षा अवसर, संघर्ष की ओर) एक एवं अभ्युदय-2 (युद्ध- भाग1 और 2) का संयुक्त रूप भी प्रकाशित है। इसमें राम कथा श्रंखला में अरण्य काण्ड, सुंदर काण्ड, किष्किंधा काण्ड और लंका काण्ड की चर्चा की गई है।

3.1.1 दीक्षा :-

राम कथा पर आधारित नरेंद्र कोहली द्वारा आधुनिक दृष्टिकोण में लिखे गए चार उपन्यासों में पहला उपन्यास का नाम 'दीक्षा' है। राम और लक्ष्मण के विश्वामित्र के साथ उनके आश्रम जाकर वहाँ के राक्षसों द्वारा शोषित ऋषियों को सांत्वना देकर उन्हें उन राक्षसों से बचाता है। यही इस उपन्यास की मुख्य कथावस्तु है।

विश्वामित्र के आश्रम 'सिद्धाश्रम' में ताड़का, मारीच एवं सुबाहु नामक राक्षस विश्वामित्र को यज्ञ करते वक्त निरंतर बाधाएँ डालते रहते हैं। बाद में विश्वामित्र कुछ ग्राम वासियों की सहायता से आश्रम की सुरक्षा करने की बात सोची किंतु उनकी स्थिती उनसे भी दयनीय थी। ग्रामवासी राक्षसों के अत्याचारों पर आवाज़ नहीं उठाते थे। वे सदैव राक्षसों से भयभीत होकर खामोश रहते थे। सिद्धाश्रम के बाहर रहने वाले सैकड़ों लोगों की राक्षसों द्वारा धन छीन जाते थे उन्हें पीटते थे यहाँ तक कि उनकी हत्या भी

[2] आधुनिक रामकथा के सर्वश्रेष्ठ उन्नायक हैं नरेंद्र कोहली- https://yourstory.com/hindi/7ff9dea0b3-narendra-kohli-is-the

करते थे। इन सब से परेशान होकर विश्वामित्र इन राक्षसों का अंत करने के लिए अयोध्या के युवराज राम की सहायता लेने का निर्णय करते हैं।

विश्वामित्र जब दशरथ के राज सभा में पहुँचकर राक्षसों के कारण उनको हुए नष्ट के बारे में बताते हैं तो दशरथ उनसे अपनी सेना को उनके साथ भेजने का वादा करता है। किंतु दशरथ उन्हें मना करते हैं और राम को उनके साथ भेजने की माँग करते हैं।

राम लक्ष्मण और विश्वामित्र दण्डकारण्य के लिए निकल जाता है। रास्ते में विश्राम करने के लिए कुछ वक्त बिताने के लिए सरयू तट रुक जाते। राम के साथ कुछ वक्त बिताने पर विश्वामित्र को इस बात का एहसास होता है कि राम अन्य आर्यवर्ता राजा-युवराजाओं से भिन्न हैं। वे राम को अपने लिए अनुकूल मानते हैं और उन्हें उनके पास जो दिव्यास्त्र थे उनसे संबंधित शिक्षा देते हैं और राक्षसों के साथ युद्ध करने के लिए उन्हें तैयार करते हैं।

विश्वामित्र से प्राप्त दिव्यास्त्र की ज्ञान से राम सबसे पहले ताड़का का वध करते हैं। अन्य राक्षसों के वध करने से पहले राम चाहता था कि वह लोगों के अंदर उनके खोई हुई थी धैर्य और आत्मविश्वास लौटाए। इसीलिए राम आश्रम पहुँचते ही आश्रमवासियों को आयुधों के साथ रहने का निर्देश देते हैं। मैं आश्रमवासियों के साथ रात भर पहरा करते हैं। ताड़का का वध करके राम ने सभी का विश्वास जीत लिया था। जब उन्हें एहसास हुआ कि अन्याय के खिलाफ निष्पक्ष होकर लड़ने के लिए कोई मिल गए हैं तो बच्चे बूढ़े सभी अपने हाथों हाथ में हथियार लेकर राक्षसों के साथ लड़ने के लिए तैयार हो गए थे।

विश्वामित्र ने यज्ञ आरंभ किया और मारीच एवं सुबहू राक्षसी सेना के साथ यज्ञ में भंग डालने के लिए आ गए। किंतु राम ने सुबहू का अंत किया एवं मारीच को घायल। लक्ष्मण ने आश्रमवासियों को नेतृत्व दिया और राक्षस के सेना को पराजित किया। विश्वामित्र सफलतापूर्वक अपने यज्ञ संपन्न किया।

गहन नामक निषाद के पुत्र उन पर अत्याचार करने वाले सेनानायक बहुलाश्व के पुत्र और उसके साथियों को बंदी बनाकर विश्वामित्र के समक्ष लाते हैं। वे अपराधी जब राम को वहाँ देखते हैं तो बहुत खुश हो जाते हैं। उन्हें लगता है कि वे आर्य वर्ग के होने के कारण राम उन्हें न्याय दिलाएँगे। क्योंकी राम आर्य सम्राट दशरथ के प्रतिनिधि है। किंतु राम उन आर्य युवाओं को मृत्युदंड देने का प्रस्ताव रखते हैं। आर्य होने के कारण वे अपराधियों को बक्श देने के लिए तैयार नहीं होते। राम कहते है - "आर्य किसी जाति, वर्ण, आकर अथवा पक्ष का नाम नहीं है। वह मानवीय सिद्धांत, आदर्श और महान चरित्र का नाम है। जो अमानवीय कृत्य इन्होंने निषाद स्त्री - पुरुषों के साथ किए हैं,

उन पापों के प्रतिकार के लिए, इन राक्षसों के लिए में न्यूनतम दंड प्रस्तावित करता हूँ – मृत्युदंड।"[3] सिद्धाश्रम को राक्षसों के चंगुल से पूर्ण रूप से मुक्त कराके राम, लक्ष्मण एवं विश्वमित्र मिथिला की ओर प्रस्थान करते हैं।

इस उपन्यास के अगले खंड में अहल्या उद्धार आता है। यात्रा के दौरान आगे बढ़ते हुए विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को आश्रम की कुलपति गौतम की पत्नी अहल्या की कहानी सुनाते हैं। आश्रम के समारोह में शामिल हुए इंद्र अहल्या पर मोहित होता हैं और उसका बलात्कार करने का प्रयत्न करता है। जब यह बात आश्रम के लोगों को पता चलता है तो उपकुलपति सहित समुदाय में से कोई इंद्र के विरुद्ध न जाकर अहल्या को दोषी ठहरा देते है। उस आश्रम को त्याग करके नए आश्रम खोलने का निर्णय लिया जाता है। राजा जनक गौतम को नए आश्रम के कुलपति नियुक्त करते हैं। सामाजिक परिवर्तन के प्रतीक्षा में गौतम, अपने जीवन के 25 साल नए आश्रम में अपने पुत्र के साथ काटते हैं। अहल्या पुराने आश्रम में अकेली शिलावत् जीवन व्यतीत करती है।

विश्वामित्र राम को लेकर अहल्या की कुटिया में जाते हैं। पच्चीस साल गुज़र जाने पर भी गौतम अपने उनके पुत्र शतानंद और अहल्या को न्याय नहीं दिला पाए थे। राम जैसे ही अहल्या से मिलता है वह आगे बढ़कर उनके चरण छूकर आशीर्वाद लेते हैं। सामाजिक तिरस्कार के भय से कोई भी अहल्या के पास जा नहीं पाते थे। किंतु जब राम और लक्ष्मण उनके पास गए तो कोई भी उन पर प्रश्न नहीं कर पाए क्योंकि वह अयोध्या के राजकुमार थे और राक्षसों को हरा के समाज में राक्षसों के प्रति भय को कम कर दिए थे। उन्हें इंद्र या रावण से डर नहीं लगता था।

गौतम इस बात से वाकिफ थे की अहल्या पवित्र है। किंतु यह बात वे समाज को समझा नहीं पाए। इसी कारण वह अहल्या को छोड़कर नए आश्रम में जाने का फैसला किया। उन्होंने सोचा कि वह इंद्र से प्रतिशोध भी लेंगे और साथ ही समाज में नए मूल्यों को सृजन करेंगे। इंद्र को आर्यवर्ता में अपूजनीय होने का शाप देने में वे सफल हुए थे। वह इसलिए क्योंकि वह पुराने आश्रम छोड़कर जनक की इच्छा के अनुसार नए आश्रम के कुलपति बन गए थे। सीरध्वज ने यह शर्त रखा था कि जब तक वे नए आश्रम में अपने पद की मर्यादा का पालन करेंगे तब तक उस शाप की रक्षा करने की ज़िम्मेदारी सीरध्वज पर होगा। अहल्या की पवित्रता पर पूर्ण विश्वास होते हुए भी सामाजिक रूढ़ियों की रहते हुए वे उन्हें स्वीकार नहीं कर पाए। पीड़ित स्त्री को स्वीकारने में असमर्थ पुरुष के रूप में गौतम को इस उपन्यास में चित्रित किया गया है। लेखक ने ऐसे बने-बनाए रूढ़ियों को

---

[3] नरेन्द्र कोहली – दीक्षा – पृ. स – 73

तोड़कर समाज को यह शिक्षा दिया है कि पुरुष के हवज़ की शिकार बनी स्त्री को समाज से बहिष्कृत करना गलत है ।

अहल्या उद्धार के बाद विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को मिथिला लेकर जाते हैं । सीता सीरध्वज की गोद ली हुई पुत्री थी। खेत जोतते हुए सीरध्वज को सीता मिली थी। उसका कुल या गोत्र के संबंध में उन्हें कोई जानकारी नहीं थी। जाति-पाँती से विभाजित समाज में सीता की विवाह एक समस्या बनी। अज्ञानकुलशीलता होने के कारण उसे कोई स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हुए। आर्येतर जाति में जनक सीता की विवाह कराना नहीं चाहते थे और जिन आर्य राजाओं की रिश्ता आए, वे अधिकतर बूढ़े या पहले से सौ-पचास विवाह कर चुके थे। ऐसे लोगों के साथ सीता की विवाह कराना उन्हें स्वीकार्य नहीं था।

विवाह से संबंधित अपवादों से सीता की रक्षा करने के लिए सीरध्वज उसे वीर्यशुलका घोषित कर देते हैं । शर्त यह था कि राज महल में रखी शिव धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने वाले को ही सीता के लिए योग्य वर माना जाएगा। जब विश्वामित्र ने राम को सीता के स्वयंवर में भाग लेने का आदेश दिया तो राम ने कहा कि उसे सीता की अज्ञातकुलशीलता होने से कोई परवाह नहीं है । मिथिला की राजकुमारी सीता अपनी अज्ञात माता-पिता के कर्मों का फल भोगने की बाध्य नहीं है । राम का कहना था कि - "एक असाधारण रूपवती राजकुमारी से विवाह के लिए कोई आर्य राजकुमार प्रस्तुत नहीं यदि वह अज्ञातकुलशीला है तो उसमें उस कन्या का क्या दोष?[4]" राम पत्नी के रूप में एक साथी चाहते थे जो जनसेवा करने के लिए अपने आप को समर्पित करें। राम से विवाह करने के संबंध में सीता की विचार एवं राय जाने बिना वह सीता से विवाह करने के पक्ष में नहीं थे। राम के मन की सारी आशंकाओं को विश्वामित्र मिटा देते हैं और उन्हें स्वयंवर के लिए मना लेते हैं।

सीता के सहमति मिलने के पश्चात राम सीता की स्वयंवर में भाग लेते हैं और राम शिव धनुष को उठाने एवं सर प्रत्यंचा चढ़ाने में सफल हो जाता है । धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने की प्रक्रिया में भयंकर आवाज़ के साथ वह धनुष टूट जाता है । इसीलिए सीता परिणय के बाद जब वे वापस अयोध्या जाते हैं तो रास्ते में राम की भेंट परशुराम से होती है । शिव धनुष की राम के हाथों टूट जाने की खबर सुनकर वे रुष्ट होकर आए थे ।

[4] नरेन्द्र कोहली - दीक्षा - पृ. स 158

अजगव का ध्वंस के संबंध में क्रोधित होकर परशुराम राम से सवाल करते हैं । क्षत्रियों के प्रति परशुराम के मन में पूर्वाग्रह बैठ गए थे जिसके कारण जब उन्होंने एक क्षत्रिय के हाथों अजगव का ध्वंस होने की खबर सुना तो उनसे सहा नहीं गया। राम उन्हें समझाते हैं कि कभी किसी समय क्षत्रियों ने अन्याय किया होगा किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि हर काल में ऐसे अत्याचारी क्षत्रिय ही जन्म लेंगे। राम की बात सुनकर वे यह स्वीकार करते हैं कि वे सही है । वह रूढियों में बंद रहने के कारण पुराने और वर्तमान परिस्थितियों में अंतर स्वीकार करने में असमर्थ रहे। भेंट के रूप में परशुराम राम को वैष्णवी धनुष देते हैं जिसकी संचालन करके राम एक बार फिर से अपनी निपुणता का प्रदर्शन करते हैं। अंत में राम और सीता की बारात अयोध्या की ओर प्रस्थान करते हैं।

3.1.2 अवसर :-

अभ्युदय उपन्यास के प्रथम भाग का दूसरा कांड या नरेंद्र कोहली द्वारा लिखित रामचंद्र कथा श्रृंखला की दूसरी उपन्यास अवसर में रामायण को यथार्थ एवं वैज्ञानिक धरातल पर देखने का कोशिश किया गया है। इसमें अयोध्या के राजनीतिक परिस्थितियों का वर्णन हुआ है। राजनीतिक भविष्य को लेकर आशंका, कैकेयी, कौशल्या एवं सुमित्रा की मानसिक स्थिति को लेखक ने अपनी दृष्टिकोण से व्यक्त किया है। कैकेयी और उसके भाई युद्धाजीत की बढ़ती शक्ति से दशरथ घबरा जाता है । अयोध्या उनके हाथ से निकलते जा रहे थे। ऐसे में दशरथ राम को सिंहासन पर बिठाने का फैसला करते है।

राम के राज्याभिषेक के निर्णय के चलते दशरथ दुविधा में पड़ जाते हैं । कैकेयी के साथ जब दशरथ के विवाह होने जा रहे थे तब कैकेयी का भाई युद्धाजीत ने उनसे यह प्रण लिया था कि कैकेयी के पुत्र अर्थात भरत को अयोध्या के राजा बनाएँगे। युद्धाजीत द्वारा सत्ता की कब्ज़ा होने के भय में दशरथ राम का राज्याभिषेक बिना किसी को सूचित किए कराना चाहते थे। राज्य हित कहकर किसी भी संशयात्मक व्यक्ति को दशरथ कारगृह में बंद कराने का आदेश देते हैं। अपने पिता के स्वभाव में आए परिवर्तन को देखकर राम चिंतित हो जाते हैं। जन सामान्य की रक्षा का राम ने जो विश्वामित्र को वचन दिया था उसका पूर्ण न होने की संभावना को लेकर भी राम व्याकुल हो जाता है।

जब कैकेयी को दशरथ की योजनाओं के संबंध में ज्ञान होती है तो वह रुष्ट हो जाती है। क्रोध में वह भरत की राज्याभिषेक और राम को चौदह वर्ष वनवास भेजने का वर माँगती है। कैकेयी के हृदय में राम के प्रति वात्सल्य ज़रूर थी किंतु अपने पुत्र को युवराज बनाने का वचन जो दशरथ ने सालों पहले उसे दिया था वह उसे भूल जाने को

तैयार नहीं थी। कैकेयी इस बात को समझ लेती है कि उससे छुपाकर राम के राज्याभिषेक का निर्णय जो दशरथ ने लिया था वह कैकेयी के प्रती दशरथ के अविश्वास को सिद्ध करती है ।

कैकेयी राम को अपनी विवाहित जीवन की व्यथा के बारे में कहती है कि कैसे उसे यौवन में एक वृद्ध से विवाह करना पड़ा और इसीलिए शर्त के तौर पर उसने अपने पुत्र को युवराज बनाने की माँग रखी। शंबर युद्ध में दशरथ की जान बचाने की वजह से दशरथ ने उसे दो वर दिया दिए थे। आज दशरथ न उस शर्त की मान रख रहे थे न उन की जान बचाने पर उसे दी गई वर की। कैकेयी कहती है – "राम! मैंने दो वर माँगे हैं।" क्षण भर कैकेयी अपने भीतर की पीड़ा से जूझती रही, और फिर कठोरता का कवच ओढ़कर बोली, "पहला, तुम्हारे युवराजाभिषेक के लिए प्रस्तुत की गई सामग्री से ही भरत का युवराजाभिषेक हो; और दूसरा, तपस्वी वेश में तुम आज ही चौदह वर्षों के लिए वनवास के लिए प्रस्थान करो।"[5] यह बात सुनकर राम चौदह साल वन में जाने का निर्णय लेते हैं ।

राम शीघ्र ही वन जाने के लिए तैयार होते हैं । किंतु सीता अपने पति को अकेले भेजने के लिए तैयार नहीं थी। वह अपने पति के कर्मों की सहयोगी बनना चाहती थी। राम के लाख मना करने के बावजूद भी सीता तर्क में जीत जाती है और राम उसको साथ लेकर जाने के लिए मान जाते हैं ।

लक्ष्मण भी राम की वनवास जाने की खबर सुनकर क्रुद्ध हो जाता है । क्रोध में आकर वह कैकेयी को बंदी बनाने की बात करता है । राम उसे समझाता है कि मनुष्य राशी की सेवा करना और राक्षसों का वध करने के संबंध में जो वचन उन्होंने विश्वमित्र को दिया था उसको पूर्ण करने के लिए वन जाना ही एक बेहतर उपाय है ।

राम के बातों का विरोध करके वह भी राम के साथ वनवास पर जाने का निर्णय कर लेता है । दशरथ, कौशल्या, सुमित्रा एवं प्रजा की सुरक्षा का भार तथा राजधानी की जिम्मेदारी अपने सहयोगियों को सुयज और चित्ररथ को सौंपकर राम, सीता और लक्ष्मण वन की ओर प्रस्थान करते हैं ।

राम, सीता और लक्ष्मण पहले सरयू तट पर स्थित त्रिजट के आश्रम में विश्राम के लिए कुछ देर रुक जाते हैं और फिर तमसा तट के लिए निकल जाते हैं । वहाँ से भरद्वाज के आश्रम जाने का निर्णय किया । इन सबके बीच दशरथ से आज्ञा लेकर सुमंत्र वहाँ आ जाता है । वे राम को वापस ले जाने आए थे । किंतु राम इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं

[5] नरेन्द्र कोहली – अवसर – पृ स 51

करते । किंतु दशरथ द्वारा सीता के लिए भेजे गए वस्त्र एवं आभूषण स्वीकार करने के लिए मना नहीं करते ।

भरद्वाज राक्षसों के विरुद्ध आंदोलन करना चाहते थे। राक्षसों ने सामान्य जनों का जीना मुश्किल कर दिया था। वह नहीं चाहते थे कि साधारण व्यक्ति शांतिपूर्ण जीवन जिए, तपस्या का ज्ञान उन्हें मिले और विभिन्न जातियाँ एक दूसरे के निकट आए और वे परस्पर अपने ज्ञान बाटे। अतः वे नहीं चाहते थे कि लोगों के जीवन में सभ्यता आए। इनसे लड़ने के लिए लोगों का संगठित होना आवश्यक है। भरद्वाज राम के समक्ष अभिमत करता है कि बिखरे मानवीय शक्ति को इकट्ठा करने में उनकी मदद करें, जनता को प्रशिक्षित करें और उन्हें इसके लिए नेतृत्व दे। राक्षसी विरोधी संघर्ष के संबंध में भरद्वाज से मिली सूचनाएँ राम को आगे कर्म क्षेत्र की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती है ।

राम, लक्ष्मण और सीता चित्रकूट पहुँच जाते हैं । वहाँ उनकी मुलाकात वाल्मीकि से होते हैं । वाल्मीकि उन्हें कला की उपयोगिता, वैयक्तिक संघर्ष एवं नेतृत्व की आवश्यकता को समझाते हैं । वहाँ से चलकर वे मंदाकिनी के तट पर पहूँच जाते हैं और वहाँ उपयुक्त स्थान देकर उनको रहने के लिए कुटिया का निर्माण करते हैं । उस राज्य के निवासी तथा वानर जाति के व्यक्ति मुखर राम के शिष्य बन कर उनसे शस्त्र शिक्षा पाने की इच्छा लेकर आता है । राम उनके अनुरोध को स्वीकार करते हैं ।

। राम मुखर एवं सीता को शस्त्र चलाने के प्रशिक्षण देने का निर्णय करते हैं । चित्रकूट के आसपास ऐसे कई सारे आश्रम थे जहाँ के ऋषियाँ राक्षसों से डर के जीते थे। वहाँ तुंभरण नामक एक राक्षस का राज चलता था। इसके अतिरिक्त एक ऐसी जाति पनप रही थी जो अन्य लोगों को धन हड़प करके खुद धनवान बनते थे। अर्थात शारीरिक विकृतियों वाले विशालकाय लोग नहीं बल्कि साधारण मनुष्य के अंदर ही क्रूर मानसिकता पनपने लगी थी। जब मानव धन के गुलाम होकर न्याय के पद से पृथक होकर चलने लगे तथा वे स्वार्थी, लालच एवं क्रूर बन जाए तब वह एक राक्षस बन जाता है । इसमें जन्म या वंश की कोई भूमिका नहीं है । एक व्यक्ति अपने कर्म से मानव या दानव बनता है । राम का यह लक्ष्य था कि वह जनता को अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए उन्हें प्रेरित करें और उनमे न्याय पर आस्था जगाए ।

सीता और मुखर का शस्त्र संचालन की प्रशिक्षण आरंभ हो जाता है । राम और सीता वन और कभी जल की विहार करके अपने मनोरंजन करते हैं । लक्ष्मण चित्रकूट के पर्वत पर आश्रम बनाते हैं । "लक्ष्मण कुटीर निर्माण के कार्य में लग गए; तब राम ने सीता और मुखर को शस्त्राभ्यास कराना आरंभ किया। मुखर को शस्त्रों के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं था, अतः उसे आरंभिक ज्ञान भी दिया जाना था। सीता को बाण –

संधान संबंधी कुछ बातें बताकर, उसका अभ्यास करने के लिए कह, राम ने मुखर को शस्त्रों के विषय में सूचनाएँ देने आरंभ की – उसे सैद्धंतिक पक्ष बात कर ही व्यवहारिक ज्ञान कराया जा सकता था।"[6]

चित्रकूट के पास एक बस्ती में रहने वाले राक्षसों की अत्याचारों से पीड़ित वनकन्या सुमेधा से सीता की मुलाकात होती है । सुमेधा की माता पिता तुंभरण नामक राक्षस के दास बन चुके थे जिसके कारण सुमेधा को भी उस राक्षस की दासी बनना पड़ा । कुंभकार भी तुंभरण का दास है । सुमेधा अपने पिता और कुंभकार को राम से सहायता माँगने के लिए प्रेरित करती है और वे भागकर राम के पास आते हैं । राम उनको तुंभरण के अत्याचार से मुक्त कराने का वचन देते हैं ।

आश्रम पर तुंभरण के नेतृत्व में राक्षसों ने आक्रमण किया। लक्ष्मण उद्घोष उर्फ कुंभकार, सीता और राम उन पर बाणों की वर्षा करने लगा। राम और लक्ष्मण ने लोगों को धैर्य पूर्वक तुंभरण के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा दी।

राम की नेतृत्व में लोगों ने तुंभरण और उनकी सेना को पराजित किया। लोगों ने तुंभरण की हत्या करके पूर्ण रूप से स्वतंत्र हुए और वे राम की शरण में आ गए। राम उन लोगों को जो प्रबोधन, एकता एवं त्याग की महत्व के संबंध में समझाते हैं और भी सीख जाते हैं ।

राम, सीता और लक्ष्मण वन में सुखमय जीवन जीते हैं । एक दिन इंद्र का पुत्र जयंत सीता को कुटिया में अकेली पाकर उसके साथ दुर्व्यवहार करने की कोशिश करता है । पर सीता धैर्यपूर्वक उसका प्रतिरोध करती है ।

राम वहाँ पहुँच जाते हैं और जयंत को इंद्र के पुत्र होने के बात सुनकर चौंक जाते हैं । राम जयंत से कहता है कि जब राम को उसके पिता इंद्र का अहल्या के साथ की अत्याचार के संबंध में पता चला था तो उन्होंने इंद्र का वध करने की प्रतिज्ञा ली थी। आज उनके समक्ष इंद्र के पुत्र खड़ा जिसने अपने पिता द्वारा किए गए गुनाह को दोहराया है तो उससे वही दंड दिया जाएगा। जयंत राम से अपने प्राण की भीख माँगता है तो राम उसकी एक आँख फोड़ कर उसे दण्ड देते हैं ।

दशरथ का देहांत हो जाता है । भरत सिंहासन पर विराजमान होने से इनकार करता है और राम को वापस अयोध्या लेकर आने के लिए सेना के साथ और चित्रकूट में आ जाते हैं । राम वापस आने से मना कर देते हैं और भरत को वापस भेज देते हैं । किंतु भारत के आगमन के कारण राम का ध्यान अपने परिवेश में हो रही घटनाओं से विचलित

[6]नरेन्द्र कोहली – अवसर – पृ. स 130

हो जाता है और इसी बीच राक्षस आश्रमों पर आक्रमण करते हैं । भरत के आगमन की सूचना मिलकर राक्षसों के मन में आशंका उठती है और आश्रम की ब्रह्मचारीयों से इस बात से संबंध में पूछताछ करते हैं । किंतु वे राक्षसों को उत्तर देने में असमर्थ हो जाते हैं और राक्षस उन पर भयंकर रूप से अत्याचार करना शुरू करते हैं । ब्रम्हचारी राम के साथ मिलकर उनसे प्रतिशोध करने का सुझाव कालकाचार्य को देते हैं किंतु वे मना करते हैं । अंत में कालकाचार्य के अनुमति से वे राम के आश्रम में शरण लेते हैं । कालकाचार्य राम से उनकी सुरक्षा करने की अनुरोध करते है ।

इस उपन्यास में लेखक ने राम के वन में आगमन के राजनीतिक तथा वैयक्तिक पक्षों पर प्रकाश डाला है । एक साधारण राजकुमार ने राक्षसों के दमन की ज़िम्मेदारी का अपने सिर में लिया था जब देवों ने इस परेशानी को अनदेखा कर दिया था और अन्य राजा एवं सम्राट ऐसे करने में असमर्थ हो गए थे। समाज में न्याय को स्थापित करने का राम के प्रयत्न को लेखक ने इस उपन्यास में दर्शाया है । एक नेता के रूप में राम की प्रतिभा पर इस उपन्यास में लेखक ने ध्यान केंद्रित किया है ।

3.1.3 संघर्ष की ओर :-

रामचंद्र कथा श्रृंखला का तीसरा भाग 'संघर्ष की ओर' राम सीता और लक्ष्मण के पंचवटी निवास पर केंद्रित है । जन जागरण अभियान की संघर्ष की और राम की यात्रा की कथा इसमें कहा गया है । इस उपन्यास के संबंध में नरेंद्र कोहली का कथन इस प्रकार है "इस उपन्यास में अपने युग की परिस्थितियाँ चित्रित करने तथा अपने युग के चिंतन को वाणी देने का सर्वाधिक अवकाश मिला है और मैंने उसका उपयोग करने का भरसक प्रयत्न किया है । इसमें राक्षसों द्वारा खाए गए तपस्वियों की हड्डियों के ढेर का चित्रण है, आत्मदाह करने वाले शरभंग यहाँ हैं; राम को अपने आश्रम में ठहराने से डरते हुए सुतीक्ष्ण हैं और पंचासर में अप्सराओं के साथ विहार करते हुए नृत्य और संगीत में मग्न मांडकर्णी भी है।"[7]

शरभंग मुनी राक्षसों से पीड़ित जनसमूह को बचा नहीं पाए, उनको अभय देने में वे असफल हुए जिसके कारण स्वयं आत्महृति करते हैं । चित्रकूट में भरत के आकर जाने के पश्चात राम और उनका दल वहाँ से दंडक की ओर प्रस्थान करने का निर्णय लेता है । शरभंग के आश्रम में जाकर उनसे मिलने इस यात्रा की एक लक्ष्य था। किंतु उनके वहाँ पहुँचने से पहले यह ऋषि शरभंग ने आत्महत्या कर लिया था । शरभंग राक्षसों की आक्रमण से परेशान होकर जनता को इकट्ठा करके राक्षसों के विरुद्ध जागरूक करने का प्रयत्न किया। राम के बारे में सुनकर उन्हें राम पर विश्वास हो गयी थी कि वे उन्हें और

[7] डॉ के. सी. सिन्धु – राम कथा कालजयी चेतना – पृ स 56

जनता को राक्षसों से मुक्ति दिलाएँगे। किंतु कुछ समय पश्चात उनको उनकी आशाएँ असफल होती नज़र आई। उन्हें मानवता पर संदेह होने लगा। उन्हें इन्द्र पर विश्वास था किंतु इन्द्र से बातचीत करने के बाद वह आस भी टूट गया। निराश होकर उन्हें आत्मदाह करने का फैसला किया। शरभंग के शिष्य ज्ञानश्रेष्ठ से राम को उस आश्रम की भयंकर स्थिति के संबंध में ज्ञान होता है । पर राम और उनके दल के वहाँ रुकने से उनको खतरे की संभावना अधिक थी क्योंकि राक्षसों को अगर राम के आने का खबर मिल जाता है तो वह एक बार फिर आक्रमण करेंगे। इसीलिए ज्ञानश्रेष्ठ की इच्छा थी कि वे वहाँ से तुरंत चले जाए। ऋषि को राम की प्रतीक्षा थी।

आगे की यात्रा में धर्मभृत्य नामक ऋषि राम और उनके दल का मार्गदर्शन करते हैं । धर्मभृत्य को राक्षसों के विरुद्ध राम के जन आंदोलन पर विश्वास तो था किंतु वे अन्य विषयों के समान राम से या संघर्ष से बचने की इच्छा नहीं रखते। वह यह देखने आए थे कि राम कितने बहादुर थे और राक्षस के विरुद्ध जो संघर्ष उन्होंने छिड़ी है उसमें वह कितने सफल होंगे। जैसे ही उन्हें राम की शक्ति पर विश्वास हो जाएगा वे स्वयं ही राम का आत्मीय बनकर उनके साथ खड़े रहने के लिए तैयार होंगे। उस यात्रा में राम के पीछे ग्रामीण लोग और वनवासी उनके टेलियों के साथ उनसे जुड़ना शुरू किया।

धर्मभृत्य उन्हें अगस्त्य मुनि की कथा सुनाती है । राक्षसों के विरुद्ध संघर्ष आरंभ किए अगस्त्यमुनि एक योद्धा थे जिन्होंने आर्य–आर्येतर संघर्ष को रोकने का अहम भूमिका निभाया है । उन्होंने राम से पूर्व सैन्य का संगठन करना, वानर जाति को शस्त्र विद्या सिखाना, इनको एक साथ लाकर शिक्षित करने में अगस्त्यमुनि का सहयोग रहा है । उनकी पत्नी लोपमुद्रा ने इसमें उनका साथ दिया है । अगस्त्याश्रम पहुँचने तक यह कथा चलती है और इस कथा के अंतर्गत मुर्तु की कहानी को भी एक स्वतंत्र कहानी के रूप में कहा गया है ।

धर्मभृत्य के आश्रम के निकट एक बस्ती थी जहाँ खान में काम करने वाले श्रमिक रहते थे। इस खान के मालिक इस श्रमिक वर्ग पर अत्याचार करते थे। उनको न पूरे वेतन दिए जाते थे और न ही रहने के लिए अच्छी कुटिया। उनकी स्थिति अत्यंत दयनीय थी।

मांडकर्णी नामक युवक खान श्रमिकों के नेता बन जाता है । उसने श्रमिकों को संगठित करके उन्हें अपने अधिकारों के बारे में समझाया। थोड़ी ही समय में मांडकर्णी खान श्रमिकों का विश्वास जीत लेता है । पर खान मालिक अग्निमित्र मांडकर्णी को अपने वश में कर लेता है और वह खान मालिकों के पक्ष में हो जाता है ।

मांडकर्णी की धोखे के बारे में सुनकर ऋषि शरभंग खान श्रमिकों का नेतृत्व का भार ले लिया। खान मालिकों ने शरभंग और खान श्रमिकों पर आक्रमण किया। शरभंग ने

इंद्र से सहायता माँगी किंतु इंद्र उनकी सहायता नहीं करते और बाद में शरभंग आत्मदाह कर लेते हैं । अपने दोनों नेताओं की पराजित अवस्था देख चुके श्रमिक वर्ग राम पर भरोसा करने के लिए तैयार नहीं हुए।

अगले दिन राम का दल खान श्रमिकों के लिए कुटिया बनाना शुरू करते हैं । लक्ष्मण और उनके साथी जब वन में लकड़ी काटने गए तो अग्निमित्र के भतीजे उग्राग्नि और सेना उन पर आक्रमण करते हैं । लक्ष्मण उन्हें पराजित करते हैं और उन्हें राम के समक्ष लेके आते हैं । खान मालिक श्रमिकों की शरण में इसलिए सुधार नहीं लाना चाहते थे क्योंकि उन्हें डर था कि बेहतरीन शरण में रहकर वो खान में जानवर जैसा काम करने के लिए मना करेंगे।

राम श्रमिकों को समझाते हैं कि खान पर खान मालिकों का कोई अधिकार नहीं है इसीलिए उन्हें अपने परिश्रम भी बढ़ाने की आवश्यकता नहीं है । राम खान मालिकों से कहते हैं – "अब से खान का स्वामित्व सारे श्रमिकों का है । तुम लोग भी चाहे तो खान में उचित परिश्रम कर, उसके स्वामित्व के भागी हो सकते हो। अब से खान से उत्पादित धन सारे श्रमिकों का होगा और उसका वितरण सबकी सामूहिक इच्छा से होगा।"[8]

खान श्रमिकों को खान मालिकों द्वारा की रात में उनकी कुटिया में आग लगाने की पद्धि की सूचना मिलती है । राम और दल संघर्ष के लिए तैयार रहते हैं किंतु सुबह होने पर उन्हें पता चलता है कि खान मालिक खान छोड़कर भाग चुके थे। खान श्रमिकों के समूह को आसपास के राक्षस एवं अन्य धनवान सत्ताधारियों से खतरा होने के कारण उन्हें शस्त्र विद्या का प्रशिक्षण देना आरंभ करते हैं ।

राम आश्रम में रहने वाले खान श्रमिकों के लिए विद्या प्रदान करना प्रारंभ करते हैं । राम खान श्रमिकों को स्वतंत्रता, स्वतंत्रता से मिलनेवाली और उसकी संरक्षण के महत्व को समझाते हैं । "मुक्त करना अथवा मुक्त होना कठिन नहीं है, किंतु मुक्ति की रक्षा अत्यंत कठिन है । उसके लिए आपको सजग रहना होगा। इसका अर्थ है कि आज ही से मुक्त – क्षेत्र के प्रत्येक स्त्री – पुरुष बच्चे के लिए शस्त्र तथा शस्त्र परिचालन की शिक्षा। मुक्त – क्षेत्र का प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को सैनिक माने – वनवासी भी और श्रमिक भी। उन्हें सैनिक बनाने का दायित्व लक्ष्मण अपने ऊपर लें।"[9] कुछ लोग पढ़ाई को बीच में छोड़ना चाहा तो सीता ने उन्हें प्रोत्साहित किया। वह कहती है कि – "अक्षर ज्ञान चेतना का आरंभ है, और चेतना न हो तो मनुष्य सरलता से दमित होता चला जाता

---

[8] नरेन्द्र कोहली – संघर्ष की ओर – पृ स 78

[9] नरेन्द्र कोहली – संघर्ष की ओर – पृ स 87

है।”[10] खान में सुरक्षा पूर्वक काम करने की नई तरीके लक्ष्मण उन्हें सिखाते हैं । अन्न के लिए वे खेती करना भी आरंभ करते हैं । इस प्रकार आश्रम में एक व्यवस्थित प्रणाली का स्थापना हुआ।

राम का दल धर्मभृत्य के आश्रम में वापस चला जाता है । कुछ दिन बाद एक बार फिर ग्रामवासियों पर राक्षस आक्रमण करते हैं । उसके बाद वे राम से सहयोग करने में अनिष्ठा दिखाएँ स्वामियों के चले जाने के कारण खेती रुक गई जिसके कारण अन्न भी कम होने लगी। राम के नेतृत्व में खेती प्रति आरंभ किया और धीरे-धीरे अन्य लोग सहयोग दिखाना शुरू किया। राक्षसों की तरफ से इस बार कोई संगठित के आक्रमण से राम के नेतृत्व में लोगों को बचाए गए और राक्षसों को पराजित किया गया।

इस प्रकार खान श्रमिकों की मुक्ति केवल अत्याचारों से मुक्ति नहीं बल्कि अशिक्षा, गरीबी और दासत्व का भी मुक्ति बनी। राम ने खान श्रमिकों को स्वावलंबी बनाया और राक्षसों से लड़ने के लिए उन्हें अस्त्र विद्या सिखा कर जन सेना भी तैयार कर दिया। राम ने लोगों को सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक व्यवस्थाओं के प्रती अवगत कराया और एक नई समाज का रूपांतरण किया। सीता सुधा की मदद से नारी विकास का कार्यक्रम शुरु करते हैं । राक्षसों से लड़कर राम भूमिहीन लोगों को भूमि भी प्रदान करते हैं । राम कहते है "भूमि उन्हीं की होती है, जो उसे जोतते - बोते हैं । तुम उसे जोतोगे - बोतोगे तो वह अब भी तुम्हारी ही होगी। जैसे नदी और उसका जल किसी एक व्यक्ति का नहीं होता, किंतु यह व्यक्तिगत इच्छा अथवा आवश्यकता पर निर्भर करता है कि कोई व्यक्ति कुआँ खोदकर उसमें से पानी पीता है । उसी प्रकार तुम में से कोई कृषि कर्म छोड़कर कोई अन्य उद्योग आरंभ कर दे - यह उसकी इच्छा है, अन्यथा भूमि तुम्हारी ही है ।”[11] इन सब से प्रभावित होकर सुतीक्षण जैसे मुनी आध्यात्मिकता से निकलकर आश्रमों में शस्त्र अभ्यास देना आरंभ करते हैं ।

सुतीक्षण के आश्रम के मार्ग से राम सीता और लक्ष्मण अगस्त्य ऋषि के आश्रम में पहुँच जाते है । अगस्त्य मुनि के साथ राम साधारण जन की स्थिति, राक्षस के शक्ति जैसे विषयों के संबंध में चर्चा करते है । वे अगस्त्य मुनि से आशीर्वाद लेकर पंचवटी की तरफ निकलते है ।

राम का दल अगस्त्याश्रम से निकलकर पंचवटी की ओर चलता है । रास्ते में उनकी मुलाकात जटायु से होता है । जटायु गृध्र नामक जाति में जन्मा एक बूढ़े मनुष्य है जो दशरथ के मित्र थे। जनस्थान में राक्षसी अत्याचार से विरुद्ध संघर्ष करने के लिए जनता को संगठित करने वाले एक योद्धा भी है।

[10] नरेन्द्र कोहली - संघर्ष की ओर - पृ स 90
[11] नरेन्द्र कोहली - संघर्ष की ओर - पृ स 177 - 178

रावण की बहन शूर्पणखा जनस्थान में राक्षसों की नेतृत्व करती थी। वह बहुत ही क्रूर स्वभाव की थी। वह अपनी दासियों और नौकरों के साथ अत्याचार करती थी। छोटी सी छोटी गलतियों पर भी उनके साथ निर्दयापूर्वक व्यवहार करती थी। उसकी मन इतनी निष्ठुर थी कि वह लोगों को तड़प-तड़प के मरते हुए देखना पसंद करती थी। उसकी एक कमज़ोरी थी वह थे सुंदर आकर्षक युवक। वह उन्हें अपने अधिकार में रखती थी और उन्हें अपनी हवस की शिकार बनाती थी।

रावण शूर्पणखा की प्रेमी विद्युज्जिह्व का वध करता है क्योंकी वह विद्युज्जिह्व और शूर्पणखा के विवाह के विरोधी थे। यह बात उसके अंदर एक आग बनकर जलती रही और शूर्पणखा मैं अतृप्त कामवासना उठी।

जब शूर्पणखा को अपनी परिचारिका से असाधारण सुदर्शन राम के बारे में पता चलती है तो शूर्पणखा को राम से मिलने की इच्छा होती है। राम का दर्शन करने के बाद शूर्पणखा की हृदय में राम को पाने की इच्छा जागती है। वह बाल बनाकर और सँवार कर राम के पास जाती है और अपनी इच्छा प्रकट करती है। वह लक्ष्मण को देख कर उस पर भी मोहित हो जाती है इसीलिए राम के तिरस्कार करने पर लक्ष्मण के पास जाती है। किंतु लक्ष्मण द्वारा उसकी अनुरोध को मना करने के बाद वह क्रोधित हो जाती है। उसे लगता है कि सीता की रहते उसे दोनों में से एक भी प्राप्त नहीं होगी। इसीलिए सीता पर आक्रमण करती है। लक्ष्मण शूर्पणखा की नाक और कान पर कटार से रेखा बनाकर चोट करते हैं जिससे खून बहने लगते हैं। शूर्पणखा मानसिक और शारीरिक रूप से आहत हो जाती है।

घाव से तड़पती शूर्पणखा सीता और लक्ष्मण के वध करके राम को जिंदा पकड़ने का निर्णय लेती है और अपनी राक्षसी सेना को राम के खिलाफ युद्ध करने का आदेश देती है। शूर्पणखा की सेना युद्ध में पराजित होती है। लक्ष्मण और सीता की जान को खतरा होने के कारण राम उन्हें युद्ध में हिस्सा लेने नहीं देते। राम अपनी सेना के साथ अकेले युद्ध करके जीतते हैं।

शूर्पणखा इस अपमान को सह नहीं पाती और वह लंका चली जाती है। विभीषण शूर्पणखा को उसकी करतूतों के लिए डाँटते हैं उनके चौदह सहस्त्र राक्षसों की हत्या का उत्तरदायित्व शूर्पणखा पर डालते हैं। शूर्पणखा विभीषण की बात मानने के लिए तैयार नहीं होती और वह रावण के पास अपनी शिकायत लेकर जाती है। रावण उससे कहता है कि वह अगले दिन अपनी सेना को लेकर राम के साथ युद्ध के लिए जाएँगे किंतु शूर्पणखा रावण को राम और की उनकी सेना की शक्ति के संबंध में सचेत करते हुए कहती है कि वह उसे हरा नहीं पाएँगे।

शूर्पणखा रावण को समझाती है कि जनस्थान में राम को हराना कठिन है । शूर्पणखा की मत में जीत हासिल करना है तो युद्ध लंका में होना चाहिए जिसके लिए राम को लंका में आने के लिए विवश करना होगा। इसीलिए शूर्पणखा रावण को सीता की अपहरण करने का सुझाव देती है । शूर्पणखा अपने भाई की कमज़ोरी को जानती थी इसीलिए वह रावण को सीता की सौंदर्य का वर्णन करके उसे लुभाती है । शूर्पणखा की बातें सुनकर रावण सीता की अपहरण करने के लिए मान जाता है ।

रावण मारीच के साथ सीता की अपहरण का योजना बनाता है । मारीच विश्वामित्र के आश्रम में आक्रमण के समय राक्षसी सेना को छोड़कर भाग गया था। उस पर लगी इस कलंक को मिटाने के लिए रावण उसे सीता हरण के में रावण का साथ देकर राम के हाथों मरने का आदेश देता है ।

मारीच राम से मिलने की जनस्थान की आश्रम में पहुँचता है और चालाकी से राम को आश्रम से दूर ले जाता है । मारीच के पीछा कर रहे राम उसके वृक्षों के बीच ओझल हो जाने के पश्चात "हा... लक्ष्मण" कहकर पुकारते हुए सुनते हैं और उसे बाण चलाकर मार देते हैं ।

इधर सीता मारीच की पुकार को राम का समझकर परेशान हो जाती है । वह लक्ष्मण से राम की सहायता करने के लिए जाने को कहती है पर वह नहीं मानता। लक्ष्मण को अपने भाई पर विश्वास था, इसीलिए वह मारीच की छाल में बसने के लिए तैयार नहीं था। पर सीता की ज़िद के आगे उसे झुकना पड़ता है। सीता को आश्रम के भीतर ही रहने की और मुखर को जटायु और गाँव से जनसेना को बुलाने का निर्देश देकर लक्ष्मण राम को ढूँढने के लिए निकलता है।

लक्ष्मण का निकलते ही रावण आश्रम की तरफ जाता है । वह जटायु को संदेश देने के लिए निकले मुखर को मार डालता है । रावण सीता को उठाकर अपने तीव्रग्रामी रथ की ओर बढ़ता है । सीता उससे छुड़ाने की परिश्रम करती है किंतु असफल हो जाती है । जटायु रावण को रोकने का प्रयत्न करता है किंतु रावण उसे भी मार डालता है ।

रावण सीता को लंका ले कर आता है । रावण की इस बर्ताव से उसकी पत्नी मंदोदरी क्रोधित होती है और उसका विरोध करती है । वह रावण को समक्ष यह शर्त रखती है कि एक वर्ष तक सीता अशोक वाटिका में रहेगी। इस समय के अंदर अगर वह रावण को स्वीकार करने के लिए तैयार होती है तो उसके साथ विवाह करने के लिए मंदोदरी को कोई आपत्ति नहीं है । अपने पुत्र और अपनी पत्नी उसकी विरोधी न हो जाए इसलिए रावण इस शर्त को स्वीकार करते हैं और सीता को अशोक वाटिका में रखी जाती है । इस बीच रावण का पुत्र इंद्रजीत, मंदोदरी और विभीषण रावण को सीता से दूर रखने का प्रयत्न करते रहते हैं ।

3.1.4 युद्ध

युद्ध भाग–1 और भाग–2 में किष्किंधाकाण्ड, सुंदरकाण्ड और लंकाकाण्ड की कहानी बताई गई है। युद्ध भाग–1 में सुग्रीव का राजतिलक. बालि का आक्रोश, राम सुग्रीव का भेंट, बालि वध, लंका की ओर हनुमान की यात्रा जैसी घटनाएँ चर्चित की गयी हैं।

3.1.4.1 युद्ध भाग–1 :-

बालि द्वारा दुंदभी के वध के वर्णन के साथ इस भाग का आरंभ होता है। दुंदभी एक असाधारण भैंसा था जिसको हराना एक शिकारी के लिए गर्व की बात थी। इसके कारण वह बालि उसको मारना का निर्णय करता है। बालि दुंदभी का पीछा करके मतंग वन तक पहुँच जाता है। उसे मारने में बालि सफल हो जाता है किंतु मतंग वन के बाकी लोगों के साथ लड़ने की शक्ति उसमें नहीं बचती। मतंगों से अपनी जान बचाने के लिए वह भाग जाता है।

मायावी नामक राक्षस किष्किंधा में आकर राक्षसी संस्कृति को प्रचार करने का प्रयत्न करता है तो हनुमान, सुग्रीव, अंगद जैसे न्याय के रक्षक उसे रोक लेता है। अपने बचाव के लिए दावा करता है कि वह सिर्फ थके मन को शांत करने की काम करता है। मानसिक रूप से थके बालि इस बात पर आकर्षित होता है। बालि उसे वचन देता है कि अगर वह उसके अशांत मन को शांत कर सका तो बालि उसके काम को धार्मिक स्वीकार करेगा।

मायावी को मुक्त किया जाता है। इसके मुक्त हो जाने के कारण सारे किष्किंधा में मदिरा और व्यभिचार का प्रचार होना आरंभ होता है बालि को अपनी प्रेमिका से मिलने के लिए मायावी द्वारा रोका जाता है तो वाली को गुस्सा आता है और बालि मायावी को पकड़ने का आदेश देता है। मायावी का पता लगने पर वाली उसको पकड़ने के लिए निकल जाता है। उसका पीछा करते वह एक नगर प्राचीर के एक टूटे भाग में पहुँच जाता है। बालि उसके अंदर कहीं महीनों तक फस जाता है।

कई माह व्यतीत हो जाता है और बालि नहीं लौटता। सभी यह मानने लगता है कि बालि मायावी के हाथों मारा गया। किष्किंधा की सिंहासन को और खाली ना रखने पाने के कारण सुग्रीव का राज्याभिषेक किया गया और किष्किंधा का नया राजा बन जाता है।

कुछ समय के पश्चात बालि वापस किष्किंधा आता है। किष्किंधा के सिंहासन में सुग्रीव को बैठा देख बालि क्रोधित हो जाता है। उसे यह सब एक साजिश लगता है। बालि सुग्रीव को मारने का प्रयत्न करता है। सुग्रीव अपनी जान बचाकर ऋष्यमुख पर्वत

पर आश्रय लेता है जहाँ बालि का आना संभव नहीं था। बालि के शासन के दौरान वह गलत रास्ते पर चलने लगा और राक्षसी संस्कृति की ओर बढ़ावा होने लगा। उसने समाज सुधार के लिए कुछ नहीं किया। सुग्रीव सिंहासन पर बैठते हैं समाज के लिए जो कार्य करना शुरू किया था और जो सकारात्मक परिवर्तन लाए थे उन सब को बालि ने नष्ट कर दिया। बालि ने सुग्रीव की सहयोगियों से प्रतिशोध लिया और सुग्रीव की पत्नी रुमा को ज़बरदस्ती अपना बनाया। सुग्रीव की अपनों पर हो रहे अत्याचार के बारे में सुनकर उसने यह फैसला किया की वह स्वयं को जीवित रखेंगे। बालि के साथ युद्ध या आत्महत्या करने का विचार वह छोड़ देता है ।

सुग्रीव हनुमान के ज़रिए उन लोगों को संदेश भेजता है जो बालि के आतंक से पीड़ित हैं और जिन्होंने अपनी बंधुओं को खोया है । वह बालि के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं ।

सुग्रीव को लक्ष्मण का शबरी की कुटिया में ठहरने का खबर मिलता है । सुग्रीव यह निर्णय लेता है कि इससे पहले बालि उन तक पहुँचे, वे राम से मिलेंगे और सीता की खोज में उनकी सहायता करने का प्रस्ताव रखेंगे। इसके बदले में उन्हें बालि के साथ युद्ध करने में उनकी मदद करनी होगी। राम इस शर्त को स्वीकार करते हैं और उनके बीच मित्रता हो जाती हैं ।

राम सुग्रीव से कहते हैं कि बालि को युद्ध के लिए ललकोरे और स्वयं उसकी वध करें ताकि जीत उसकी हो, किंतु पहले दिन युद्ध में सुग्रीव हार जाता है । राम सुग्रीव को वचन देते हैं कि वे उनके जीवन की रक्षा करेंगे। अगले दिन द्वंद युद्ध के दौरान राम बाण चलाकर बालि की हत्या करते हैं ।

किष्किंधा की शासन वापस सुग्रीव के हाथ में आ जाता है । सत्ता हाथ में आते ही सुग्रीव राम को दिए वचन के बारे में भूल जाता है और वह भोग विलास में डूब जाता है । किष्किंधा की राजव्यवस्था बिगड़ना लगता है । वर्षा ऋतु के समाप्त होने पर भी सीता की खोज के लिए सुग्रीव ने कोई कदम नहीं उठाया। राम लक्ष्मण को सुग्रीव को अपनी वादे की याद दिलाने के लिए किष्किंधा भेजता है । लक्ष्मण उसे बालि जैसे ना जीने की सलाह देता है सुग्रीव को अपनी गलती का एहसास हो जाता है और वह लक्ष्मण से क्षमा माँगता है ।

अंगद के नेतृत्व में एक दल को सुग्रीव दक्षिण की ओर भेजते हैं । हनुमान की हाथ में राम अपने विवाह की मुद्रिका सोंपते हैं । वह दिन और रात सीता को ढूँढने में व्यतीत करते हैं । इस प्रकार एक माह खत्म होने को थी और उन्हें सीता के संबंध में कोई समाचार प्राप्त नहीं हुआ। रास्ते में उनकी मुलाकात जटायु के प्रकार गिद्ध जात की व्यक्ति

सम्पात्ति से हुआ जो उनकी शक को सत्य साबित करते हुए उन्हें यह बताते हैं कि सीता को रावण लंका ले गए है ।

निश्चित सूचना प्राप्त होने पर समुद्र पार करके सीता को खोजने का फैसला लिया जाता है । हनुमान एक ऊँची शिला से समुद्र में छलांग लगाते हैं और महेंद्रगिरि पर पहुँचने के बाद आगे तैर के जाते हैं । "पानी जोर से उछला और हनुमान को उसने अपने भीतर छिपा लिया। कुछ क्षणों के पश्चात दस हाथ आगे जाकर हनुमान जल से ऊपर उभरे। उनकी गर्दन और कंधे पानी के ऊपर दीख रहे थे और लंबी-लंबी भुजाओं से पानी को परे धकेलते हुए वे धनुष से छूटे बाण के समान लपके जा रहे थे।"[12] रास्ते में सर्प जाति का एक जीव हनुमान के मार्ग को रोकता है । किंतु हनुमान धैर्यपूर्वक उसे पराजित करके आगे निकल जाते हैं । एक और विचित्र जीव उन्हें रास्ते में मिलता है । उसे भी परास्त करके हनुमान त्रिकूट के निकट सागर तट पर पहुँच जाते हैं ।

लंका के द्वार पर पहुँचते ही उनकी मुलाकात नगरपालिका से होता है जो हनुमान को देहाती समझकर अंदर जाने से रोकती है । किंतु उसे धक्का देकर नगर की ओर भाग जाता है और एक वृक्ष के पीछे छुप जाता है । शर्मिंदगी के कारण नगरपालिका किसी का आवाज़ नहीं देती और वह अपनी स्थान पर खड़ी हो जाती है । हनुमान नगर की ओर आगे बढ़ जाते हैं ।

3.1.4.2 युद्ध भाग-2 :-

इस उपन्यास श्रृंखला के अंतिम भाग युद्ध भाग-2 में हनुमान का लंका प्रवेश, राम और वानरों द्वारा सेतु का निर्माण, राम-रावण युद्ध एवं रावण की अंत की कथा बताई गई है ।

उपन्यास के शुरू में लेखक ने लंका की सौंदर्य का वर्णन किया है । हनुमान की आँखों के ज़रिए हमें लंका की एक झलक दिखाने का लेखक प्रयत्न करते है ।

हनुमान बड़ी कठिनाइयों का सामना करते हुए लंका में प्रवेश करते हैं । हनुमान जब लंका की सैर करते हैं तो, उनकी हृदय में कई प्रश्न एवं संदेह उठते हैं । धनवान जितने एश-ओ-आराम से रहते है गरीब लोग उतने ही गन्दगी में जीते है । रावण सदैव विलास में डूबा मदिरा और स्त्री की लोभ में पड़े रहते हैं । यह सब देखकर हनुमान को घृणा होती है । रास्ते में वह एक छोटे बच्चे और वृद्ध की बातों से अशोक वाटिका के बारे में सुनते हैं और उसकी और प्रस्थान करते हैं । हनुमान अशोक वाटिका में प्रवेश करते हैं । वहाँ वे सीता को एक श्वेत साडी में रावण के साथ बहस करती हुई देखते हैं । रावण

---

[12]नरेन्द्र कोहली - युद्ध भाग 1 - पृ स 330

सीता से अपनी प्रेम का इज़हार करता है लेकिन सीता इस प्रस्ताव को ठुकरा देती है और द्वंद युद्ध के लिए उन्हें चुनौती देती है । रावण उन्हें एक वर्ष की अवधि देकर क्रोध में लौट जाता है ।

सीता विरह में आत्महत्या करने की कोशिश करती है तभी हनुमान राम की विवाह मुद्रिका दिखाकर सांत्वना देते है और राम की कुशलता सुनाते हैं । "माता! मैं किष्किंधा के वानर सम्राट सुग्रीव का मंत्री हूँ । भद्र राम ने वानर राज का महान उपकार किया है; अतः राम तथा वानरराज में प्रगाढ़ मैत्री हो गई है । राम और सौमित्र इस समय किष्किंधा में हैं और रावण से युद्ध के लिए वानरों की विकट सेना तैयार कर रहे हैं । मैं आपका अन्वेषण करने आया हूँ । लौटकर आपका समाचार दूँगा तो तत्काल सैनिक अभियान आरंभ होगा। आप धैर्य बनाए रखें।"[13]

सीता हनुमान को अपनी चूड़ामणि देती है और उसे लेकर हनुमान वापस जाने का निर्णय करते हैं । भूख और प्यास के कारण रावण कदली वन से कदली तोड़कर खाते हैं । रावण की सेना वहाँ आ जाती है और वह हनुमान को पकड़ते हैं । हाथापाई में रक्षा दल का न्याय अक्षय कुमार हनुमान के हाथों मारे जाते हैं । रावण के पुत्र इंद्रजीत हनुमान को कैद करता है । विभीषण को हनुमान के पकड़े जाने का खबर मिलता है तो वह हनुमान और सीता को सुरक्षित रावण की कैद से आज़ाद करने की योजना बनाता है जिससे कि वह सीता को भी मुक्त करा सके। राम-रावण की युद्ध होने से वह रोकना चाहते हैं जिससे लंका के जनसामान्य को नुकसान पहुँच सकता है ।

रावण हनुमान को कृत्रिम पूँछ बनाकर उसमें आग लगाने का आदेश देता है । लंका की सेना एक लंबी कृत्रिम पूँछ बनाकर हनुमान के पीछे लगाते हैं और उसमें आग लगाते हैं । हनुमान मौका देकर उनसे बचते हैं और आग लगी कृत्रिम पूँछ लेकर वहाँ से भाग जाते हैं । हनुमान ज्वलशील सामग्रियों के भंडार ग्रहों में जाते हैं और वहाँ आग लगते है । इसके बाद हनुमान राम के पास वापस लौट जाते हैं ।

विभीषण को सदैव लंका की जनता का चिंता रहती है । वे रावण को लंका की सुरक्षा के बारे में सूचना देते हैं पर रावण ध्यान नहीं देता । भाईचारे से ज्यादा उन्हें अपने लोग प्यारी थी जिसके कारण वे राम के साथ संधि करने का फैसला करते हैं । अपने मित्रों के साथ राम से मिलता है और वह निर्दोष जैन की सुरक्षा का वचन लेता है साथ ही रावण के साथ युद्ध में राम के साथ देने के लिए राम भी विभीषण से वचन लेता है ।

लंका तक पहुँचने के लिए समुद्र को पार करने की समस्या अत्यंत विषमदायक थी। नील को समुद्र के संबंध में गहरा ज्ञान था वह एक ऐसे स्थान खोज निकालता है जहाँ

[13] नरेन्द्र कोहली - युद्ध भाग 2 - पृ स 41

समुद्र की गहराई काम है । वहाँ पानी शांत रूप से बहने के कारण व्यवसाय जोतो मैं पत्थर भर कर पानी में डालते है जिससे एक सेतु बनता है ।

राम अपनी सेना के साथ सागर तट पर पहुँचते हैं । राम की सेना के आगमन के साथ ही, सागर तट पर कुछ निषाद मछुवारे रहते थे और वानर सेना को देखकर वे भाग जाते हैं। कुछ राक्षसी चौकियाँ भी थीं जो अपनी चौकियों को छोड़कर लंका की ओर बढ़ते हैं। इससे राम चिंतित हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि राक्षस उनकी क्रियाओं की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं, और वे किसी समय आक्रमण कर सकते हैं। सागर तट पर रहने वाले ग्रामवासी राम से मिलते हैं और जब राम सवाल करते हैं कि क्या वे उनके व्यक्तिगत युद्ध में भाग लेना चाहेंगे, तो वह मान जाते है ।

लंका में रावण के गुप्तचर सागर तट तक राम के सेना के आने की सूचना देते हैं। रावण क्रोधित हो जाते हैं । उनका मनना है कि अगर वह राम को पंचवटी में ही मार देता, तो यह अवसर कभी नहीं आता। विभीषण रावण को हालत की गंभीरता को समझाने का प्रयास करते हैं । विभीषण कहते हैं कि राम लंका का राज छीनने नहीं बल्कि अपनी पत्नी सीता को वापस पाने आ रहे हैं। रावण क्रोधित होते हैं और विभीषण को चुप रहने की चेतावनी देते हैं। वह सीता को वापस करने के लिए राज़ी नहीं होते ।

रावण युद्ध के पहले कूटनीति के बल पर राम को पराजित करना चाहता है। उसने अपने गुप्तचार को भेजा, जो सुग्रीव को राम की पक्ष में छोड़ने की प्रस्तावना करता है, लेकिन सुग्रीव और अंगद उसके बातों को अनुसुनी कर देते है । हनुमान ने राम को आश्वस्त किया कि उनकी यह संबंध स्वार्थ के लिए नहीं है, बल्कि यह न्याय और अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए बना है । यह युद्ध शोषकों के खिलाफ शोषितों द्वारा लड़ा जा रहा है। यह व्यक्तिगत युद्ध नहीं है, बल्कि यह पीड़ित मानवों के अन्याय और उत्पीड़न के खिलाफ लड़ा जा रहा है। कोहली जी ने यहाँ हनुमान के द्वारा कहे गए बातों के माध्यम से युद्ध की महत्वपूर्णता को समझाया है ।

राम रावण युद्ध शुरू हो जाता है रावण की सेना के अंधकार में भी युद्ध लड़ते हैं । उन्हें अंधकार में युद्ध करने में कोई भी असुविधा नहीं हो रही थी। राम अपनी सेना के विषय में चिंतित होते हैं, वे चकित भी होते हैं कि राक्षस सेना किस अभ्यास पर अंधकार में शत्रु पर प्रहार कर रही है? वानर सेना अग्नि काष्ठों के आधार पर युद्ध कर रही थी। किन्तु उस क्षीण प्रकाश में वानर सेना राक्षसों के व्यूह को देखने, उनकी स्थिति को समझ पाने में असक्षम थी। रावण के महारथी यज्ञशत्रु महोदर महापार्श्व आकर राम को चारों ओर से घेरते हैं, राक्षस रथ पर सवार थे और राम भूमि पर खड़े उनसे लड़ रहे थे। राक्षस कवच रक्षित रथ पर बैठ कर राम–लक्ष्मण को घायल करते है । राम के बाण कवच पर टकरा कर भूमि पर गिर रहे थे। एक वाण राम और लक्ष्मण को लगते हैं । राम लक्ष्मण मरणांतक मूर्च्छित हो जाते हैं। राक्षस सेना उन्हें मृत मानकर युद्ध बंद कर वापस

चले जाते हैं। राम और लक्ष्मण को बचाने के लिए हनुमान किष्किंधा से औषधि का ढेर लेकर आता है जिससे हम क्या चिकित्सा होती हैं और वे बच जाते हैं।

राम और रावण के बीच एक घमासान युद्ध होता है, और अंत में राम ब्रह्मास्त्र का उपयोग करके रावण का वध करते हैं । "वह घायल था और शारीरिक थकान के चिह्न भी स्पष्ट दिखाई पड़ रहे थे। राम ने अपने तूणीर में से बाण निकाला। यह बाण अगस्त्य ने राम को दिया था। ब्रह्मा-निर्मित इस बाण का उन्होंने निर्णायक क्षण में ही प्रयोग करने के लिए आदेश दिया था। राम ने रावण के कंठ का लक्ष्य कर बाण छोड़ दिया। रावण धनुष लिये कुछ इस प्रकार खड़ा था, जैसे उसे न राम दिख रहे हों, न उनके धनुष से छूटा बाण... बाण रावण के कंठ में लगा और उसका मुण्ड युद्ध भूमि में आ गिरा... रावण के सारथि ने रथ लौटा लिया। वानर सेना आगे बढ़ी। राक्षस सेना को युद्ध भूमि में स्थिर रखने वाला कोई नहीं था। रावण के रथ के पीछे उसकी सेना भी भाग चली।"[14]

युद्ध के पश्चात राम और सीता का मिलन होता है। राम सीता से कहते हैं कि राम से अलग सीता ने जो एक वर्ष अशोक वाटिका बिताया है वह उनकी अग्नि परीक्षा थी। राम सीता को अपने सैनिकों से मिलाते हैं । सीता लक्ष्मण से चिकित्सा कुटीर में जाकर मिलती हैं, और उनसे पंचवटी में किए गए अपमान की क्षमा माँगती हैं ।

राम ने विभीषण को लंका का राज्य संभालने और न्यायपूर्वक शासन करने की सलाह देते है । विभीषण उन्हें आश्वस्त करते है और इस सुझाव को स्वीकार करते है । इस भाग में राम की क्रांतिकारी और युग प्रवर्तक चरित्र का परिपूरण रूप प्रकट होता है । कोहली जी ने रामकथाओं को आधुनिक रूप से प्रस्तुत करने के लिए पुराणिक कथा को नए तथ्यों से युक्त किया है, जिसमें पात्रों के चरित्रों का सुधार किया गया है और मनोविज्ञान, सामाजिक शास्त्र, और राजनीतिक परिप्रेक्ष्यों का उपयोग किया गया है जिससे कथा में विश्वसनीयता और व्यापकता आई है ।

3.2 नरेंद्र कोहली के मिथकीय दृष्टिकोण

हर देश की अपनी विशेष संस्कृति होती है, और हर देश अपने सांस्कृतिक पहचान के रूप में मानव सभ्यता के किस्से को गर्व से अनुभव करता है । एक देश का गाधा जो उसके लोककथाओं में छिपे होते हैं, वे उसके संस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण

[14] नरेन्द्र कोहली – युद्ध भाग 2 – पृ. स 271

हिस्सा होते हैं। यह हर पीढ़ियों के बीच में प्रसिद्ध है । लोककथा परंपराएँ इतिहास के साथ ही अपना सांस्कृतिक महत्व बनाए रखती हैं । जबकि एक देश की संस्कृति के विकास के साथ इन किस्सों का रूप बदल सकता है, लेकिन उनकी गहरी तात्त्विकता, जो समयों के साथ अटल है, वह देश के सांस्कृतिक विकास का हिस्सा बनती है । लोककथाओं की इस चिरंतन गहरी तात्त्विकता के कारण, वे एक देश के सांस्कृतिक विकास को समृद्ध करती रहती हैं और प्रभावित करती हैं । इसी कारण, भारतीय पुराणों की इस महत्वपूर्ण जीवंतता के कारण ही वे कई पीढ़ियों से भारतीय साहित्य का अहम हिस्सा रही हैं । ये पुराणों के कथाओं ने हर युग में अपना स्थान बनाए रखा है । इन पुराणों के कारण ही भारतीय साहित्य को रूचिकर और प्रभावशाली बना दिया है। इन पौराणिक रचनाओं को मिथकों के रूप में वर्गीकृत किया गया है, और भारतीय भाषाओं के साहित्य में यह पौराणीक पात्र, कल्पनाओं के साथ कोई भी भाषा मुक्त नहीं रही है । राम, सीता, कृष्ण, राधा, शिव, पार्वती, गंगा, यमुना, हस्तिनापुर, द्वारका, वृंदावन, आदि जो भारतीय संस्कृति का अटूट हिस्सा हैं, वे सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य का एक अद्वितीय हिस्सा हैं ।

व्यक्तिगत दृष्टिकोण के अनुसार, पौराणिक रचनाओं को अलग-अलग तरीकों से देखा जा सकता है । किसी व्यक्ति के लिए पौराणिक पात्र उनकी अद्‌भुतता और अतिमानवीयता के कारण एक अवतारी व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हो सकता है और उनके प्रति भक्ति की भावना हो सकती है । दूसरे किसी के लिए, कोई पौराणिक कथा को साहित्यिक महत्व के रूप में नहीं देखता है, बल्कि उसे कोरी कल्पना और अंधविश्वास को प्रोत्साहित करने वाला सामग्री मान सकता है । कुछ लोग भक्ति के बदले में आदर की भावना रख सकते हैं, कुछ काल्पनिक होते हुए भी कथा के स्रष्टा की कल्पनाशक्ति और उनके कालजयी दृष्टिकोण से प्रभावित हो सकते हैं । उपन्यासकार नरेंद्र कोहली ने अपने रचना "अभ्युदय" में इन विभिन्न दृष्टिकोणों का समर्थन किया है; उन्होंने कथा की महत्वपूर्णता, पात्रों की मानवीय क्षमता, और रचनाकार के कालजयी दृष्टिकोण को स्वीकार किया है, लेकिन उन्होंने अलौकिकता और चमत्कार से मुक्त होकर पात्रों और कथा के संदर्भ को मानव जीवन के सामान्य प्रक्रियाओं में देखने का प्रयास किया है ।

3.2.1 नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला में मिथक

रामकथा के पुनः लिखित उपन्यासों की सूची देखि जाए तो उसमे डॉ. नरेंद्र कोहली का विशिष्ट स्थान है, क्योंकि उन्होंने रामकथा में राम के चरित्र को अवतार, ईश्वर, और चमत्कारिक अविश्वसनीय मिथकों से अलग करके आधुनिक दृष्टिकोण में मनोवैज्ञानिक तरीके से प्रस्तुत किया है।

आदिकाव्य नाम से जानी जानेवाली वाल्मीकीय रामायण ही रामकथा का मूल रूप में है । वैदिक साहित्य में रामायण के कई पात्रों के नाम मिलते हैं, लेकिन रामकथा की कथारूप वैदिक साहित्य में नहीं पाया जाता। डॉ. कामिल के अनुसार वैदिक रचनाओं में रामायण के कुछ पात्रों के नाम हैं, लेकिन उन पात्रों के आपसी संबंध की कोई सूचना नहीं मिलता। वाल्मीकीय रामायण ही मूल मिथक के रूप में माना जाता है और रचनाकाल की दृष्टि से देखा जाए तो वह 300 ई. पू. के बाद है । इसके बावजूद यह रामायण भारत भर में प्रसिद्ध हो गया है । विभिन्न भारतीय भाषाओं के संदर्भ में, अन्य रामायणों की मूल कथा वाल्मीकि रामायण के वर्णित कथा के साथ मेल खाती है । अध्यात्म रामायण का रचनाकाल 1300-1400 ई के बीच माना जाता है और रामचरितमानस की रचना 1500-1600 ई के बीच हुई है । अन्य रामायणों का भी इसी काल में प्रसिद्धी हुए। भारतीय जनमानस में राम की कथा उच्च प्रतिष्ठा रखती है ।

वाल्मीकि रामायण और 'अभ्युदय' के बीच का मुख्य अंतर यह है कि उपन्यासकार ने कथा को और भी गहनता से देखने का प्रयास किया है । प्रत्येक कथा संदर्भ के सभी पहलुओं को देखने और उसका आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करने के लिए, लेखक ने मौलिक रचना पद्धति का उपयोग किया है । रामायण की कथावस्तु को अपने तरीके से प्रस्तुत करने के साथ, लेखक आलोचकों और राम भक्तों के साथ उसकी समीक्षा का भी हिस्सा बने हैं; लेकिन रामकथा को उन्होंने उसके साथ अपने विचारशीलता, कल्पना और आधुनिक समस्याओं को जोड़ने के संबंध में, उनका तर्क यह है कि वे कुछ नया जोड़ने का प्रयास कर रहे थे, इसलिए वे रामकथा को एक नई दिशा में लिखा है।

कोहली जी ने अपनी कृति 'अभ्युदय' (दो भाग) में रामकथा के पूरे क्रम का युगानुकूल विवरण किया है । प्रथम भाग 'दीक्षा, अवसर, और संघर्ष की ओर' में, विश्वामित्र ऋषि ने राम को राक्षसों के उत्पात से लेकर परिणामस्वरूप होने वाले समूल्यों के नष्ट होने और राक्षसी वृत्तियों के आतंक को विस्तार से लिखा। युद्ध में राम-रावण युद्ध एवं राम के विजय का वर्णन है।

'अभ्युदय' उपन्यास द्वारा नरेंद्र कोहली ने दिखाया है कि वाल्मिकीय रामायण का सम्मान करते हुए एक आधुनिक लेखक इस पौराणिक कथा को आधुनिक और प्रगतिशील ढंग से प्रस्तुत कर सकता है । इसमें कोहली जी ने अपनी रचनात्मक क्षमता और इतिहास के ज्ञान का प्रदर्शन किया है। कोहली जी के उपन्यास में कई नए पात्र हैं, जो न वाल्मीकीय रामायण में पाए जाते हैं और न ही किसी अन्य रामायण में। ये पात्र, जैसे कि यात्राओं में मिले वनवासी, ग्रामवासी, श्रमिक, मछुआरे, दास, और दासियाँ, रामकथा के अलंकार नहीं हैं, बल्कि वे जीवंत और व्यक्तिगत गुणों के

साथ प्रेरणास्पद पात्र हैं, जो राम के जीवन-ज्ञान को और भी गहरा बनाते हैं और राम से संघर्ष और प्रेरणा प्राप्त करते हैं ।

'दीक्षा' उपन्यास की कथा का आरंभ विश्वामित्र की आश्रम से होता है । पारंपरिक रामायण से भिन्न इसमें राम की बाल्य काल पर कोहली जी का रामायण की शुरुआत नहीं होती। रामायण की बालकांड के प्रथम भाग पर इन्होंने प्रकाश नहीं डाला है । पुनः लिखित रामायणों में शायद ही किसी लेखक ने इस तरह से राम कथा प्रारंभ की होगी। लेखक ने राम के जन्म से लेकर एक नया मिथक पाठकों के सामने रखा है जिससे उनकी बचपन की कथा को खुद राम और लक्ष्मण की मुख से कहलवाया है । कोहिली जी मिथक को यथार्थ के धरातल में देखते हैं जिसके कारण श्रृंखला में हम कहीं भी आ अमानुषिक तत्व देखने को नहीं मिलेंगे।

यदि हम उपन्यास की कथा को रामायण की कथा के संदर्भ में देखें, तो हमें विविधता दिख सकती है । वाल्मीकीय रामायण में, दशरथ के शासन के अंतर्गत, अयोध्या और उसके नागरिकों की सुखमय जीवन का वर्णन उपलब्ध है । हालांकि, लेखक ने इस स्थिति को इस दृष्टि से देखा होगा कि यदि अयोध्या में सुखमय जीवन था, तो विश्वामित्र के आश्रम में राक्षसों के हमले कैसे हो सकते हैं? अगर विश्वामित्र दशरथ से मदद के इरादे से आए हैं, तो स्पष्ट है कि उनका आश्रम अयोध्या के बहुत करीब होगा। इसलिए नज़दीकी स्थितियाँ राक्षसों के हमले के लिए अनुकूल थीं। यह शासन की दुर्दशा का प्रतीक है । इसके अलावा, लेखक यह भी सवाल उठाते हैं कि विश्वामित्र दशरथ के पास क्यों आए? उत्तर यह है कि दशरथ एक प्रमुख राजा थे और उनके पुत्र अपने व्यक्तित्व के लिए प्रसिद्ध थे। प्रमुख राजा के पास नज़दीकी स्थितियाँ अनाक्रमणिक थीं, तो यह स्पष्ट है कि राजा बहुत सुखी थे और उनकी शासन प्रणाली में कुछ त्रुटियाँ थीं। वाल्मीकीय रामायण में, दशरथ के मंत्री और उनकी नीति का विस्तारित वर्णन भी उपलब्ध है । उपन्यासकार ने दशरथ में शासन के प्रती एक विभिन्न दृष्टिकोण अपनाया है ।

इसी प्रकार प्रजा के सामने अयोध्या के राजा की अच्छी चरित्र बनाये रखने के लिए ही पुत्र कामोष्टि याग की कथा अयोध्या के दरबारी कवि और इतिहसकारों ने बुने है । जिन्होंने पुत्र कामना में अनेक विवाह करके पुत्रोष्टि याग के माध्यम से चार पुत्रों की प्राप्ति की कथा का प्रचार किया कोहली जी ने राम कथा की छिपे राजनीतिक यथार्थ का पर्दाफाश करने का प्रयास किया है । लेखक का दृष्टिकोण है कि दशरथ ने पहले कौसल्या से विवाह किया था, फिर सुमित्रा से, और फिर कैकेयी से। उन्होंने इसे बयान किया है कि दशरथ के पिता अज राम को कोसल के साम्राज्य के उत्तराधिकारी मानते थे, लेकिन दशरथ लिए वे मात्र कौसल्या के पुत्र थे। इसके बाद, कैकेय के आक्रमण के बाद कैकेयी

राजमहल में आयी। लेखक यह भी कहते हैं कि कैकेयी और राम के बीच आरंभ में तिरस्कृत अवस्था थी, परंतु बाद में कैकेयी ने उनसे प्यार करना शुरू किया और दशरथ भी राम को प्यार करने लगे।

कोहली जी रावण की राक्षसी संस्कृति को देशभर फैल रही एक महामारी के रूप में चित्रित किया है जिससे लोगों को राम एक वीर नायक की तरह बचाने का प्रयत्न करता है। लेखक ने इस उपन्यास में राम को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है जो पीड़ा को सही रूप से समझते हो क्योंकि लेखक के अनुसार पीड़क के साथ संघर्ष करने वाले ही पीड़ा सही को समझते हैं । यहाँ राम के प्रति जनता की भावनाओं का प्रकाश डाला गया है । विश्वामित्र का उद्देश्य राम को एक लोकप्रिय नेता के रूप में प्रस्तुत करना है जिससे जनता में आत्मविश्वास जाग्रत किया जा सके। उनका लक्ष्य यहाँ भी है कि राम अन्य आर्य राजाओं की तरह सुख लोलुपता में नहीं डूबे और उन्हें जनता के साथ होने वाले अन्यायों के प्रति आँखें मूँदने की बजाय उन्हें जनता की सेवा करने में लगना चाहिए।

कथा में आगे अहिल्या की उद्धार और सीता स्वयंवर की प्रमुख प्रसंग आती है । कोहली जी ने इन दोनों प्रसंगों में भी पारंपरिक राम कथा की सौंदर्य को जीवित रखते हुए अपनी दृष्टिकोण से इन कथाओं को नया मोड़ दिया। वाल्मीकी रामायण के अनुसार, गौतम ने अहल्या को शाप दिया और फिर हिमालय के तीर पर चले गए थे। लेकिन लेखक की दृष्टिकोण भिन्न है । वे मानते हैं कि गौतम ने अहल्या को अपराधी नहीं माना था। वे जनक के राज्य मिथिला गए थे, जहाँ उनके पुत्र शतानंद राजगुरु बन गए थे। रामायण में यह उल्लेख है कि अहल्या को शापमुक्ति के बाद, गौतम और अहल्या फिर से मिले और वे खुश रहे, तो सवाल यह उठता है कि यदि गौतम हिमालय चले गए होते तो शापमुक्ति के बाद वे फिर से अहल्या के पास कैसे पहुँचे? और अगर गौतम ने वाकई अहल्या को शाप दिया होता, तो फिर उन्होंने सालों बाद कैसे उसे पत्नी के रूप में स्वीकार किया?

इस कथा का यथार्थ यह है कि सामाजिक जीवन में नारी के प्रति अन्याय करने की प्रथा चल रही है । इंद्र केवल एक अत्याचारी पुरुष का प्रतिनिधि हैं, और उन्होंने अहल्या पर हमला नहीं किया, बल्कि उसे बदनाम करने के लिए उस पर आरोप भी लगा दिया। यह चाल लोगों में शंका का बीज बो दिया। पुरुष प्रधान समाज में हमेशा नारी को शंका की नज़र से देखते हैं और जब मौका मिलता है तो उसे प्रताड़ित करता है । समकालीन समाज की इस उथले मूल्य पर लेखक प्रश्नचिन्ह लगाते हैं ।

सीता भूमिपुत्री थीं और उनका कुल गोत्र अज्ञात था। वे पुत्रहीन सीरध्वज के समान थीं। हालांकि उनके विवाह में सामाजिक और जातिगत समस्याएँ थीं। उन्हें विवाह

के लिए उचित युवराज नहीं मिल रहा था। जाति, कुल, और उच्चता के मामले में भी समस्याएँ आ रही थीं। अधिकांश राजपरिवार उन्हें स्वीकारने के लिए तैयार नहीं थे । अपवादों से बचने के लिए उन्हें वीर्य–शुल्का घोषित किया। शर्त था, राजमहल में रखी शिव धनुष का संचालन करना। सीता की विवाह में कई समस्याएँ थीं, और यहाँ एक और कारण भी था कि कई नरेशों ने सीता को प्राप्त करने के लिए सामूहिक आक्रमण किया था, और इस परिस्थिति में सीरध्वज को इंद्र से मदद माँगनी पड़ी थी। इंद्र ने मदद की थी और मिथिला की रक्षा हुई थी लेकिन भविष्य में ऐसे हमलों से बचने के लिए भी कुछ कदम उठाने की जरूरत थी। इन परिस्थितियों को देखकर सीरध्वज ने शिव धनुष का सहारा लिया था। राम इस विशेष परिस्थिति को अपने सामाजिक संदर्भ में समझते हैं और उनके लिए इसे सामाजिक न्याय के प्रति उनका संबंध दिखाते हैं और वे इस जड़ता के खिलाफ खड़े होने का निर्णय लेते हैं । यहाँ हम देख सकते है कि लेखक ने सीता की अनाथ होना और उसकी कुल की अज्ञानता का उसकी और जनक के जीवन पर किस प्रकार का प्रभाव था इस बात को उभारा है । सीता की जन्म से संबंध मिथक को अनाथ बच्चो के प्रति तत्कालीन सामाज की विरक्ति और उपेक्षा को दिखाया है ।

अवसर में, लेखक ने राम के वनगमन के राजनीतिक और व्यक्तिगत कारणों को प्रस्तुत किया है। इस वनगमन की मुख्य उद्देश्य राक्षसों के पराजय की थी जो देवों से अधिक राजकुमार राम की इच्छा थी। यहाँ हम देख सकते है कि राम, सीता और लक्ष्मण को वन भेजने के कारण दशरथ की कैकेयी पर कुछ आशंकाएँ थी। राम और लक्ष्मण को भरत पर भी पूर्ण विश्वास नहीं थी।

चित्रकूट में रहते समय राम, लक्ष्मण और सीता गाँव वालों और उनके विकास के लिए कई कार्य करते हैं जिनमें से एक है उनके आश्रम में लोगों को शास्त्र विद्या सिखाना ताकि वे राक्षसों से लड़ने में सक्षम हो । राम का प्रमुख उद्देश्य सामाजिक न्याय स्थापित करने के लिए था, और वह जन–जन में संघर्ष की शक्ति को जागृत करने का प्रयास करते है । उपन्यास में शस्त्र प्रयोग में प्रशिक्षित व्यक्तियों पर राक्षसों की असमर्थता स्पष्ट दिखाई देता है । आम तौर पर आश्रमों में शस्त्र प्रयोग की शिक्षा नहीं दी जाती थी किंतु कोहली जी ने इस प्रथा में भी परिवर्तन लाया है । राक्षस जाति या वर्ग का नाम नहीं था, लेकिन वृत्ति विशेष का संकेत था। धन की प्राप्ती करने के लिए यह लोगों को राक्षसी बना देता था। राम का संघर्ष इस राक्षसी वृत्ति के खिलाफ था । वे इसमे अकेले नहीं थे बल्कि पीड़ित जनता के साथ उनका यह संयुक्त संघर्ष था। जनता को नेतृत्व की आशा थी और नरेंद्र कोहली के राम ने इसे पूर्ण किया।

संघर्ष की और में अरण्यकांड की कथा है । राम जिस धर्म भृत्य के आश्रम में ठहरते हैं, वे उन्हें अगस्त्य ऋषि और वानर जाति की कथा सुनाती है । लेखक ने अगस्त्य–

विंध्य की कहानी को आर्य-आर्येतर संघर्ष के परिप्रेक्ष्य में एक नई दृष्टिकोण से व्याख्यान किया है । वे रामायण की कथा को वास्तविकता के साथ नए तरीके से प्रस्तुत करने के लिए नए उपायों का सहारा लेते हैं ।

राक्षसों से पीड़ित खान श्रमिकों को राम द्वारा मुक्त कराने का मार्मिक प्रसंग 'संघर्ष की और' में उल्लेखित है ऐसा एक प्रसंग हमें वाल्मीकि रामायण में देखने को नहीं मिलता। लेखक ने इस प्रसंग के माध्यम से श्रमिकों को संगठित होने का संकेत दिया है, जिनके नेताओं द्वारा अपने स्वार्थ के लिए उनका इस्तेमाल किया जाता है । मालिकों के हाथों में नेता अक्सर बेचे जाते हैं, और वे अपने अधिकारों के प्रति सजग होने वाले श्रमिकों को छोड़ देते हैं । इसके परिणामस्वरूप, नेताओं पर आश्रित श्रमिकों का आत्म-विश्वास ही टुट जाता है । जब वे यह समझ लेते हैं कि वे दमन और पीड़ा का सहन न करके जीवन को सशक्त रूप से जी सकते हैं तो वे अपनी नियति के साथ लडने के लिए तैयार हो जाते हैं । इस चित्रण में दिखाया जा रहा है कि वर्गसंघर्ष और कम्यूनों के निर्माण के संकल्प समाज के विकास पर कैसे प्रभाव डाल सकते हैं । इसका मतलब है कि समाजवादी चेतना न केवल मार्क्सवाद में ही मौजूद होती है बल्कि भारतीय मिथकों और पौराणिक कथाओं में भी पाई जा सकती है । इसका कारण है कि हर कोई अपने समाज की भलाई के लिए प्रयास करते है और यह प्रयास उनकी मिथकों और कथाओं में भी दिखाई देता है ।

इस उपन्यास के इस खंड में, सामाजिक परिस्थितियों को प्राचीन और वर्तमान का तुलनात्मक परिदृश्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है और यह दिखाया गया है कि राम कैसे पीड़ित जनता को राक्षसी अत्याचार से उभारने के लिए संगठित करते हैं । यह दर्पण वर्तमान भारतीय समाज का दृश्य है। ऐसी पीड़ित जनता की स्थिति किसी समय की सीमाओं में बंदी नहीं है, बल्कि यह हर युग में राक्षसी अत्याचार के खिलाफ संघर्ष और संगठन कर रही जनता का सबूत है।

राम का दल जब अगस्त्याश्रम से विदा होकर जनस्थान की ओर बढ़ता है और तो वे गृध्र नामक जात के व्यक्ति से मिलते हैं जो रामायण कथा में जटायु के रूप में जाना जाता है। लेकिन यहाँ वह एक मनुष्य है । गृध्र दशरथ के मित्र होते हैं और जनस्थान में राक्षसों के अत्याचार के खिलाफ लड़ने वाले योद्धा है । वे राम के दल को मार्ग दिखाते हैं और जनस्थान में गोदावरी के किनारे ऊंचे टीले पर आश्रम स्थापित करने का सुझाव देते हैं, जिससे जनस्थान में जन आंदोलन की शुरुआत होती है । इस व्याख्या के आधार पर कहा जा सकता है कि एक पक्षी का मानव भाषा में बोलना और राम के पिता के मित्र होना यथार्थ से काफी दूर है।

रामायण की प्रसिद्ध प्रसंग, सीता की रावण द्वारा अपहरण इसलिए होता है क्योंकि मारीच एक स्वर्ण हिरण के रूप में राम–सीता के आश्रम के पास आता है । सीता हिरण को देखकर राम से उसे पाने की माँग करती है। राम उस हिरण को पकड़ने के लिए उसके पीछे जाते हैं और लक्ष्मण राम को ढूँढते हुए उनके पीछे जाता है। इस समय रावण सीता की अपहरण करता है और लंका लेके जाता है। कोहली जी ने इस कहानी को एक नया रूप दिया। रावण मारीच को साथ लेकर राम के आश्रम पहुँचते हैं । मारीच यहाँ एक हिरण की त्वचा का नकली आसन लेकर आता है। जब राम उसे आसन देते हैं तो वह कहता कि वह एक व्रत का पालन कर रहा है और दूसरे व्यक्ति के दिए गए आसन पर नहीं बैठ सकता। मारीच स्वर्णिम हिरण की त्वचा का आसन बिछा देता है और उस पर बैठता है। राम को जल्दी समझ आ जाता है कि वह मृगचर्म नकली है । मारीच कहता है कि वह जब आश्रम आ रहा था तब रास्ते में भी एक स्वर्ण मृग को देखा था। यह साबित करने के लिए वह राम को उसके साथ लेकर जाता है और रावण सीता का अपहरण करता है। इस चित्रण में महत्वपूर्ण बात यह है कि लेखक ने मारीच को हिरण की रूप धारण करने की बजाय स्वर्णिम हिरण के उल्लेख करते हुए प्रस्तुत किया है । मारीच द्वारा स्वर्णिम हिरण की भूषा धारण करने की कल्पना अवास्तविक विचार हो सकता है लेकिन स्वर्णिम हिरण का उल्लेख करके मारीच ने राम को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास किया और वह राम, लक्ष्मण, और सीता को आश्रम से दूर ले जाने में सफल हुआ है । यहाँ स्वर्णिम हिरण बस एक मिथ्या है, जिसका मतलब है कि मारीच की मायावी चाल है। रावण और मारीच बिना किसी मायाजाल के राम, लक्ष्मण, और सीता को धोखा देने में सफलता प्राप्त की।

आगे हम देख सकते हैं कि रावण सीता की अपहरण करके उसे पुष्पक विमान में नहीं लेके जाता बल्कि कोहली जी ने रावण के रथ को तीव्रगामी बताया है।

इसी प्रकार प्रचलित मिथक से भिन्न कोहली जी ने हनुमान को तैरकर समुद्र लाँगते हुए चित्रित किया है वायुमार्ग से समुद्र पार करते हुए नहीं। हनुमान से संबंध रामायण में एक और मिथक है जिसे लेखक ने अपनी शैली में लिखा है और वह है लंका दहन। लेखक ने हनुमान की पूँछ में आग लगाने की कथा को बड़े सुंदर तरीके से व्याख्यान किया है । वानर शब्द इसमे एक जाति का नाम है न कि वास्तविक वानर। हनुमान एक साधारण व्यक्ति होने के कारण उनका पूंछ नहीं है इसीलिए जब रावण हनुमान को दंड देता है, रावण की सेना हनुमान की कमर में रस्सी बाँधते हैं और उस पर पुराने वस्त्र लपेटकर एक दुम बनाते हैं। जब उस पर तेल लगाया जाता है तब हनुमान लंका में

तेल, लकड़ी, और अन्य ईंधन के भंडार में जाकर अपनी पूछ से वहाँ आग लगाता है । इस तरह, लेखक ने स्थिति को सुविवेक से प्रस्तुत किया है और कथा को अधिक रोचक तथा समझने में सहायक बनाया है । इस प्रकार कोहली जी ने कथा को यथार्थ के स्तर पर प्रस्तुत किया है जिससे कथा आधुनिक समाज को अधिक समझ में आती है।

कोहली जी सीता को न छूने की पीछे रावण की असली वजह को बताते हुए रावण की परिवारिक समस्याओं का भी व्याख्या देते है । लेखक ने पारंपरिक मिथक को नकारते हुए दिखाया है कि सीता को न छूने का शाप केवल एक अंधविश्वास था। रामायण में रावण को एक विश्वविजेता के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन उनकी भी कुछ सीमाएँ थीं। लेखक ने यह दिखाया है कि अगर रावण ने सीता जैसी त्रैलोक्य सुन्दरी को अपहरण किया और उसे अशोक वाटिका में बंदिनी बनाया, तो उसके लिए भी कुछ संविदानिक या नियमित प्रतिबंध हो सकते हैं, जिन्हें लेखक ने खोजा है । मंदोदरी, मेघनाद, और विभीषण, रावण की कड़ू विरोध करने के कारण ही रावण ने सीता को एक वर्ष का समय देकर कहता है की अगर एक वर्ष में स्वयं रावण को समर्पित नहीं किया तो सीता की इच्छा की विरुद्ध जाकर ज़बरदस्ती उसी अपनाना पड़ेगा। रावण अपने पत्नी, पुत्र और छोटा भाई जिसकी बहुत सारे अनुयायी है इनके खिलाफ जाने पर अंतर्विद्रोह होने का भी संभावना है । लेखक इस प्रसंग के ज़रिए आधुनिक युग के भोगी मानव के विघडित परिवार की समस्याओं को भी दर्शाया है ।

राम – रावण युद्ध में विभीषण राम के पक्ष से अपने भाई के विरुद्ध लड़ाई करता है आखिर विभीषण ने ऐसा क्यों किया? क्या उनके इसमें कोई स्वार्थ लाभ था? कोहली जी का कहना है विभीषण राम की शरण में आता है, और उन्हें यह बताते हैं कि लंकावासी रावण के अत्याचारों का समर्थन नहीं करते। राम भी राजा का अपनी इच्छाओं को अपने प्रजा पर थोपने का आरोप लगाता है। विभीषण के द्वारा दर्शाए गए आरोप का लेखक ने इस प्रकार दिखाया है कि लंकावासियों ने केवल रावण की स्वीच्छाचारिता के कारण कई बार युद्ध किया था, लेकिन वे युद्ध लंका के भूमि से बाहर हुआ था। लंकावासियों के लिए कुछ बदलने का कोई मार्ग नहीं था। यह पहली बार था कि लंका किसी सेना के द्वारा घेरी जा रही थी और युद्ध लंका के भूमि पर हो रहा था। विभीषण की इच्छा थी कि युद्ध के पश्चात् जब रावण की पराजय हो जाएंगे तब भी लंका के सामान्य नागरिकों के प्रति कोई अत्याचार नहीं होना चाहिए। लेखक ने इस संदर्भ में प्राकृतिक यथार्थ का चित्रण किया है, जिसे समय की परिप्रेक्ष्य में कालजयी माना जा सकता है।

विभीषण के आगमन से राम को एक अच्छा सहायक मिल जाता है, जो लंका की स्थिति को अच्छी तरह समझता है । लेखक ने स्पष्ट किया है कि विभीषण की शरणागति सिर्फ अपने नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिए नहीं थी, या उसे रावण द्वारा निकाल दिया जाने के कारण भी नहीं थी, बल्कि यह इसलिए थी कि वह लंका की जनता की सुरक्षा कर सके । रावण के खिलाफ जाना अपने देश की जनता की रक्षा का सही उपाय था। वह अपने नैतिक मूल्यों और विश्वासों के बारे में नहीं, बल्कि अपने देश की पीड़ित जनता की भी सुरक्षा ही प्रमुख थी ।

लेखक ने इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण सवाल का भी जवाब दिया है कि देवताओं ने राम-रावण युद्ध में स्वयं को प्रकट क्यों नहीं हुए। लेखक का समाधान यह है कि एक ओर, रावण भगवान शिव के भक्त है और वह स्वयं ब्रह्मा के प्रपौत्र है जिसके कारण शिव और ब्रह्मा की सहायता रावण को प्राप्त हो सकती है। यदि देवताएँ सीधे रावण की मदद करने आती, तो शायद वे रावण को दिव्य आयुध देकर रावण की सहायता कर सकते थे। जनकपुरी में रखे शिवधनुष और अन्य दिव्यास्त्र रावण के पास पहुँचे तो समस्या बन सकते थे। देवताएँ चाहती थीं कि राम स्वयं समस्याओं का समाधान करें, इसलिए वे गरुड़ को सहायक के रूप में भेजा।

राम-रावण युद्ध में राम के दल को कई बार गहरी चोट लगती है । पारंपरिक रामायण के अनुसार हनुमान हिमालय में जाकर पहाड़ ही उठा लाए थे, लेकिन लेखक का मत है कि हनुमान औषधियों का बड़ा ढेर लाए होंगे जिसे सब ने औषधियों का पहाड़ समझ लिया। कोहली जी के रामायण में औषधियाँ समाप्त होने पर हनुमान को किष्किंधा के वनों में भेजा जाता है। एक ही दिन में हिमालय जाकर वापस आने का सवाल ही नहीं उठता। इसलिए लेखक का कथन है कि हनुमान किष्किंधा के वनों से औषधियाँ लाए जो यथार्थ से निकट है ।

राम की सेना ने इन्द्रजित के साथ युद्ध में हार जाती है क्योंकि इन्द्रजित एक रथ में छिपकर युद्ध कर रहे थे जो बहार से देखा नहीं जा सकता था। रामायण के अनुसार, उन्हें "राक्षस का माया युद्ध" कहा गया है, लेकिन लेखक का कहना है कि वे ऐसे रथ में युद्ध कर रहे थे, जिसका पूरी तरह से आवरण था, इसलिए वे अदृश्य थे। विभीषण ने सुझाव दिया कि वे रात में इन्द्रजित पर वार करेंगे जब वह यज्ञ कर रहा हो । तब उसके पास ब्रह्मास्त्र और रथ की रक्षा नहीं होती और इसलिए वे उसे हरा सकते हैं । लक्ष्मण इन्द्रजित के साथ युद्ध के लिए गए और वे उसे मार डालता है ।

युद्ध समाप्त होते ही सीता राम के पास लौट आती है । कोहली जी ने सीता की अग्निपरीक्षा का समर्थन नहीं किया। कोहली जी के राम के अनुसार, सतीत्व मन से होता है, शरीर से नहीं। इसलिए यहाँ पर सीता को अग्निपरीक्षा देने की आवश्यकता नहीं थी। उन्होंने इतने समय तक रावण के कब्जे में बिना हारे राम की प्रतीक्षा की थी। इसीलिए उन्हें अपनी पवित्रता की प्रमाणिकता देने की ज़रुरत नहीं है । उन पर कोई प्रश्न नहीं उठा सकते। वाल्मीकि रामायण के राम द्वारा सीता की अग्निपरीक्षा की कथा उनके मर्यादा पुरुषोत्तम व्यक्तित्व से मेल नहीं खाती। कोहली जी के उपन्यास में राम का जननायक रूप होने के कारण, अपनी पत्नी से अग्नि परीक्षा की माँग करनेवाले पति का किरधार राम को नहीं जचेगा। यह भी सत्य है कि अग्नि में प्रवेश करके बिना किसी चोट के किसी का बहार आना युक्तिसंगत नहीं है।

लंका में प्रवेश के बाद, राम की सेना के लिए सुनहरा मौका बन गया क्योंकि लंका की जनता अब उनके समर्थन में आ गई थी और रावण के प्रति विरोध बढ़ गया था। रावण अपने परिवार के सदस्यों के विरुद्ध आवाज़ उठाने लगा था। उनके लिए सत्ता भोगनेवाले साथियों का ही समर्थन था, लेकिन जब राम की वानर सेना ने समुद्र पार कर लंका में प्रवेश किया, तो यह स्पष्ट हो गया कि रावण के राज्य का अंत होने वाला है । रावण ने सीता को वापस करने या अपनी हार मानने की स्थिति में नहीं था, लेकिन राम भी उसे क्षमा नहीं करना चाहते थे। उन्होंने वानर सेना के माध्यम से आर्यावर्त की पीड़ित जनता के मन में राक्षसी कृत्यों के विरोध की जागरूकता को बढ़ावा दिया। विभीषण का राजा के रूप में अभिषेक राम द्वारा किया गया। उनके लिए, रावण का पदत्याग करना जरूरी था। रावण संधि की प्रस्तावना को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था, क्योंकि इसमें सीता को वापस देने और राज्य को छोड़ने की शर्त शामिल थी। कोहली जी ने युद्ध की परिस्थितियों को यथार्थपरक रूप से पेश किया है, जिसमें राक्षसों के मायावी युद्ध को भी बोधगम्य रूप से समझाया है।

इस उपन्यास श्रृंखला में रामायण कथा को आधुनिक और यथार्थपरक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है, जो रामायण का विपरीत रूप नहीं है । रामकथा के क्रम में राम के चरित्र को अवतारत्व, ईश्वरत्व और चमत्कारी अविश्वसनीय मिथकों से अलग करके युगीन परिप्रेक्ष्य में मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करने में डॉ. नरेन्द्र कोहली का भारतीय साहित्य में सदैव विशिष्ट स्थान रहेगा।

निष्कर्ष

इस अध्याय में हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध लेखकों में से एक – नरेन्द्र कोहली जिसे आधुनिक रामकथा के उन्नायक मान जाता है, उनकी रामकथा श्रंखला की कथावस्तु और मिथक के प्रति इनकी अनोखी दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया है। अभ्युदय में कोहली जी के राम के प्रकृति में होने वाला परिवर्तन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है और यह जनता की भक्ति और श्रद्धा के परिणामस्वरूप होता है । जब लोग अपने पीड़ित सहयोगी रूप में राम को देखते हैं, तो उनमें एक भावनात्मक संबंध बनता है और वे उनके प्रति भावुक हो जाते हैं, इसलिए इसमें कुछ अस्वाभाविक नहीं होता। कोहली जी के 'राम' आज के समाज के लिए आवशयक नेता है जो लोगो को बिना किसी स्वार्थ के उनकी रक्षा करने केलिए तैयार हो ।